RNI-MAHBIL/2010/33592

जैन तीर्थवंदना

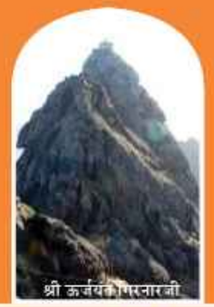

वर्ष : 13	अंक : 3	मुम्बई, जून 2023	पृष्ठ : 32	मूल्य : 25	हिन्दी
VOLUME : 13	ISSUE : 3	MUMBAI, JUNE 2023	PAGES : 32	PRICE : 25	English Monthly

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

वीर निर्वाण संवत् 2549

श्री १००८ विमलनाथ भगवान, श्री कंपिला जी क्षेत्र, उत्तर प्रदेश

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 13 अंक 3 जून 2023

श्री शिखरचन्द पहाड़िया
अध्यक्ष

श्री प्रदीप जैन (पी.एन.सी.)
उपाध्यक्ष

श्री वसंतलाल दोशी
उपाध्यक्ष

श्री नीलम अजमेरा
उपाध्यक्ष

श्री गजराज गंगवाल
उपाध्यक्ष

श्री तरुण काला
उपाध्यक्ष

श्री संतोष जैन (पेंढारी)
महामंत्री

श्री के.सी. जैन(काला)
कोषाध्यक्ष

श्री खुशाल जैन (सी.ए.)
मंत्री

श्री विनोद कोयलावाले
मंत्री

श्री जयकुमार जैन (कांटावाले)
मंत्री

श्री महेश काला
मंत्री

प्रधान सम्पादक
प्रो. (डॉ.) अनुपम जैन, इन्दौर
सम्पादक
उमानाथ रामअजोर दुबे
सम्पादकीय सलाहकार
डॉ. अनेकान्त जैन, दिल्ली
श्री सुरेश जैन (IAS), भोपाल
श्री वसंतशास्त्री, चेन्नई
श्री धरमचंद शास्त्री, दिल्ली
श्री राजेन्द्र जैन 'महावीर', सनावद
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर
पं. (डॉ.) महावीर शास्त्री, सोलापुर
श्री प्रकाश पापड़ीवाल, औरंगाबाद

राजस्थान के पांच तीर्थक्षेत्रों की स्मरणीय तीर्थयात्रा	7
महाकवि आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज का 54वां समाधि दिवस	8
प्रशममूर्ति आचार्य श्री 108 शान्ति सागर जी महाराज 'छाणी'	10
सकारात्मक विचारों का महत्व	11
वर्णी जी द्वारा १९४४ में संस्थापित उदासीन आश्रम, सागर	13
वैभारगिरि : राजगृही के पँच पहाड़ियों में से एक	24
प्राचीन नगरी वर्धमानपुरम्	26
एक श्रेष्ठ पठनीय कृति	29

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के सदस्य बनकर तीर्थों के संरक्षण-संवर्धन और उनके विकास में मार्ग दर्शन दीजिये

संरक्षक सदस्य	रु. 5,00,000/-	सम्माननीय सदस्य	रु. 31,000/-
परम सम्माननीय सदस्य	रु. 1,00,000/-	आजीवन सदस्य	रु. 11,000/-

नोट:

1) कोई भी फर्म, पेढ़ी, कम्पनी, धर्मादाय ट्रस्ट, संयुक्त कुटुम्ब, सोसायटी भी उपर्युक्त प्रावधान के अंतर्गत सदस्य बन सकेंगे। इस प्रकार की सदस्यता केवल 25 वर्षों के लिये होगी।
2) जो सदस्य आयकर की छूट चाहेंगे उन्हें 80जी के अंतर्गत कुछ रकम पर 80जी का लाभ मिलेगा।
3) सदस्यता से प्राप्त राशि ध्रुवफण्ड में जमा रहेगी उसके ब्याज की आय ही व्यवस्थापन एवं तीर्थक्षेत्र के संरक्षण, संवर्धन तथा उनके जीर्णोद्धार में व्यय की जायेगी।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी. पी. रोड, मुंबई के सेविंग खाता क्र. 13100100008770, IFSC CODE BARB0VPROAD अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी. पी. टैंक, मुंबई के खाता क्रमांक 001210100017881, IFSC CODE BKID0000012 में किसी भी शाखा में निःशुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें।

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादकों का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।
किसी भी विवाद का निराकरण मुंबई न्यायालय के अधिकार क्षेत्र में होगा

कार्यालय: भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुम्बई-400004
फोन : 022-23878293 / 022-2385 9370
website : www.tirthkshetracommittee.com, e-mail : tirthvandana4@gmail.com

मूल्य
वार्षिक - 300 रुपये
त्रिवार्षिक - 800 रुपये
आजीवन (25 वर्ष) - 2500 रुपये

सादर जय जिनेन्द्र,

बंधुओं,

जैसा कि आप सभी को विदित ही है कि आषाढ़ शुक्ल चतुर्दशी (०२ जुलाई २०२३) से वर्षायोग प्रारम्भ होने जा रहा है, वर्षायोग के महीनों में हमारे चलते फिरते तीर्थ कहे जाने वाले आचार्य, मुनि-महाराज, आर्यिका माताएं समस्त चतुर्विध संघ अपनी पद यात्रा को विराम देकर एक सुनिश्चित स्थान पर विराजमान होकर तप-साधना एवं धर्म प्रभावना करते हैं । वर्षा योग में अनगिनत सूक्ष्म जीवों की उत्पत्ति होती है जिन्हें आँखों से भी नहीं देखा जा सकता, आवागमन करने आदि कार्यों में इनकी हिंसा विराधना होने की सम्भावना बनी रहती है।

जीवों की हिंसा का निमित्त न बनें और उन्हें अभयदान मिले इसीलिए साधु संत इन चार महीनों में एक ही स्थान पर रहने की सीमा बाँध लेते हैं, यह वर्षा योग कार्तिक कृष्ण अमावस्या (दीपावली) को पूर्ण होता है । इन चार महीनों में साधु संत स्व-परकल्याण के उद्देश्य से नियमित स्वाध्याय, प्रवचन तथा जिनेन्द्र भगवान द्वारा बताये गये वीतराग मार्ग के प्रचार –प्रसार में तल्लीन हो जाते हैं। मुनि-महराजों और आर्यिका माताओं के आगमन से ग्राम नगर व शहरों की रौनक बड़ जाती है, लोगों की धार्मिक कार्यों में रूचि व वृत्ति होने लगती है।

हमारे मुनि-महाराजों, आर्यिका माताओं के सानिध्य व मंगल आशीर्वाद से अनेकों तीर्थों / मंदिरों का जीर्णोद्धार व निर्माण हुआ है। साधू-संतों के सानिध्य संयोग से क्षेत्र की कायाकल्प हो जाती है।

वर्तमान में हमारे तीर्थक्षेत्रों पर अनेकों प्रकार से आक्रमण हो रहे हैं। इस वर्ष प्रारम्भ में ही हमारे प्रसिद्द तीर्थ श्री सम्मेदशिखर जी, श्री अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ शिरपुर जैसे ऐतिहासिक तीर्थों की लड़ाई हम सभी ने जन-जन की भागीदारी में लड़ी है सभी ने अपने अपने स्तर से तीर्थों के प्रति अपना दायित्व निभाने का प्रयास किया है।

श्री सम्मेदशिखर जी, श्री शिरपुर क्षेत्र के विवाद अभी माननीय सुप्रीम कोर्ट में अपनी अंतिम सुनवाई के लिए लंबित हैं जिनकी सुनवाई की तारीखें समय-समय पर आ रही हैं । भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी ही दिगम्बरों की ओर से इन सब केसों का प्रतिनिधित्व करती है। तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से अभी तक इन सभी केसों में विपुल धन राशि खर्च हो रही है इसके लिए समय-समय पर समाज से अपील भी की गयी है और सहयोग भी मिला है परन्तु कोर्ट खर्च का यह शिलशिला अभी रुका नहीं है अधिकारों के इस अभियान में समाज का सहयोग अपेक्षित है।

इस वर्षायोग के पावन अवसर पर मैं समाज जनों से अपील करता हूँ कि जहाँ जहाँ मुनि - महाराज, आर्यिका माताओं समस्त चतुर्विध संग के चातुर्मास हो रहे हैं वहां के श्रेष्ठीजन वर्षायोग के कलश स्थापना के साथ कम से कम एक कलश तीर्थ रक्षा कलश के नाम से स्थापित करवाएं और उससे प्राप्त हुई राशि भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को भिजवाये ताकि उसे हम तीर्थों के संरक्षण-संवर्धन और उनके समुन्नित विकास में खर्च कर सकें।

साथ ही मैं समस्त चतुर्विध संघ के चरणों में नमोस्तु / वंदामि पूर्वक करबद्ध निवेदन करता हूँ कि वे समाज को तीर्थ संरक्षण के इस महत्वपूर्ण कार्य में तन-मन-धन से सहयोग करने के लिए प्रेरित करें और अपने प्रवचनों उद्बोधनों में समय-समय पर तीर्थक्षेत्र कमेटी को सहयोग करने की प्रेरणा देते रहे जिससे तीर्थक्षेत्र कमेटी सशक्त बनें।

इस पावन वर्षायोग पर मैं सभी आचार्यों-मुनि महाराजों, आर्यिका माताओं, क्षुल्लक-क्षुल्लिकायें एवं समस्त त्यागी व्रतियों के निर्विघ्न चातुर्मास संपन्न होने की मंगल कामना करता हूँ।

शिखरचन्द पहाड़िया
राष्ट्रीय अध्यक्ष

संस्कारों से ही सुरक्षित है संस्कृति

सादर जय जिनेन्द्र,

आज हम सभी चकाचौंध भरी जिन्दगी में किस ओर निरंतर दौड़ रहे हैं इस पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है। पिछले कुछ दिन अजीबों-गरीब घटनाएं सामने आई जिन्होंने हमें सोचने पर विवश कर दिया जिसमें प्रमुख घटनाएँ हमारे बच्चे- बच्चियों का अन्य धर्मावलम्बियों के बहकावे या अन्य करण से अपने रास्ते से भटकना है। अगर हमारे बच्चे अपने मार्ग से भटक रहे हैं तो इसका एकमात्र कारण है कि हम हमारे बच्चों को वह संस्कार नहीं दे सके जिससे वे मार्ग में दृढ रहें।

जैन धर्म एक अनमोल रत्न की तरह हैं हमारे संचय पूर्व पुण्यों के उदय से हमें यह जैन कुल और सच्चे देव-शास्त्र-गुरु की शरण मिली है हमें इसका मौल गंभीरता से समझना होगा और अपने बच्चों को भी समझाना होगा। इस संसार में कुछ भी पाया जा सकता है परन्तु सम्यक रुपी यह धर्म बहुत दुर्लभ है। हमारे तीर्थंकरों ने संसार के सभी वैभव, धन, संपदा, मान-प्रतिष्ठा आदि को त्याग कर धर्म को अंगीकार किया और हम जरा से धन-वैभव आदि पाने के लिए धर्म को गौण कर देते हैं यह कहाँ तक उचित हैं।

वर्तमान परिवेश में दिखावट का दौर चल रहा है सभी एक-दुसरे के पीछे अंधी दौड़ में शामिल हैं अच्छे-बुरे तक की परवाह नहीं है जिससे हमें अपने आप को और अपने समाज को संभाल ने की आवश्यकता है।

हम अपने बच्चों की लौकिक शिक्षा के लिए जितने जिम्मेदार हैं उतने ही हमारी धार्मिक शिक्षा देने की जिम्मेदारी है। हमें अपने बच्चों-युवाओं को धर्म से जोड़ना है इसके लिए पाठशालाएं, शिविर आदि का आयोजन एवं इसके प्रति बच्चों में उत्साह बढ़ाना होगा। जैन संस्कृति को आगे बढ़ाने के लिए हमें आने वाली पीढ़ी को इसके लिए तैयार करना है तभी हम अपनि संस्कृति का संरक्षण और तीर्थों का संरक्षण कर सकेगें।

कुछ दिनों पश्चात वर्षायोग चातुर्मास प्रारम्भ होने जा रहा है जो कि आषाढ़ शुक्ल चतुर्दशी से प्रारंभ होकर कार्तिक कृष्ण अमावस्या (दीपावली) तक चलता है इन दिनों में हमें हमारे आचार्य-भगवतों, मुनि महाराजों, आर्यिका माताओं एवं त्यागी व्रतियों का सत्संग का बड़ा अवसर प्राप्त होने वाला है इस चातुर्मास हम सभी एक अलख जगाते हुए जैन संस्कृति और संस्कारों को अपने बच्चों में गुरुओं के सानिध्य में उत्साह पुर्वक अर्जन करें। जिससे हमारे धर्म संस्कृति और तीर्थों का संरक्षण हो सके।

मैं सभी आचार्यों, मुनि-महाराजों, आर्यिका माताओं एवं सभी त्यागी व्रतियों के निर्विघ्न चातुर्मास समपन्न होने की कामना करता हूँ और समाज के श्रेष्ठीजनों से अपील करता हूँ कि वर्षायोग कलश के साथ-साथ एक कलश तीर्थरक्षा के नाम से स्थापित कराकर तीर्थों के संरक्षण-संवर्धन के कार्य में तीर्थक्षेत्र कमेटी को सहयोग करें।

संतोष जैन (पेंढारी)
राष्ट्रीय महामंत्री

वर्षायोग की पद्चाप सुनाई देने लगी है

वर्ष 2013 का वर्षायोग आषाढ़ शुक्ल चतुर्दशी तदनुसार 2 जुलाई 2023 से प्रारम्भ होगा उसके पूर्व यह अंक हमारे सुधीपाठकों के हाथ में पहुंच चुका होगा। अगला अंक जुलाई 2023 प्रकाशित होने से पूर्व हमारे सभी पूज्य संतगण वर्षायोग की स्थापना कर चुके होंगे। अतः वर्षायोग की तैयारियों तथा वर्षायोग में तीर्थों पर किये जाने वाले कार्यों से सम्बन्धित कुछ चर्चा इसी अंक में श्रेयसकर है।

इन पंक्तियों के लिखे जाने के समय (9 जून 2023) तक चारित्र चक्रवर्ती आचार्य शांतिसागर जी महाराज की परम्परा के पंचम पट्टाचार्य आचार्य श्री वर्द्धमानसागरजी महाराज का वर्षायोग उदयपुर में, संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का संभवतः डोंगरगढ़ में तथा शताधिक अन्य साधु संघों के वर्षायोग घोषित हो चुके हैं। चर्या शिरोमणि आचार्य श्री विशुद्धसागर जी ससंघ भोपाल से बड़ौत की ओर विहार कर रहे हैं। देष की वरिष्ठतम जैन साध्वी गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी ने अपना वर्षायोग शाष्वत तीर्थ अयोध्या में घोषित करने की स्वीकृति दी है। अन्य स्थानों पर भी साधुसंतों का सतत वर्षायोग हेतु आगमन हो रहा है। देश के प्रसिद्ध नगर इन्दौर में आचार्य श्री सिद्धांतसागर जी, आचार्य श्री विहर्षसागर जी, आर्यिका श्री विज्ञानमती माताजी, आर्यिका श्री सुदृष्टिमती माताजी, का वर्षायोग इन्दौर में होने की पूर्ण संभावना है। आगामी 20 दिनों में और भी कुछ संघ इन्दौर आ सकते हैं।

इस वर्ष श्रावण माह अधिक मास होने के कारण वर्षायोग भी एक महीने बड़ा होगा अतः लाभ भी ज्यादा मिलेगा। यद्यपि पूर्व में वर्षायोग के लिए बताये जाने वाले कई कारण आज अप्रासंगिक हो गये हैं तथापि कुछ बातें ऐसी हैं जो पहले भी प्रासंगिक थी आज भी हैं और आगे भी रहेंगी। जैसे वर्षाकाल में विवाह आदि मांगलिक कार्य अपेक्षाकृत कम होते हैं अतः श्रावक श्राविकाओं की सांसारिक कार्यों में लिप्तता कम हो जाती है और वे धर्म कार्यों में अपेक्षाकृत अधिक समय दे पाते हैं। वर्षा के कारण चतुर्दिक हरीतिमा फैल जाती है मन प्रसन्न रहता है किन्तु साधुओं द्वारा गमनागमन में स्थावर जीवों के घात से बचना एवं अहिंसा महाव्रत का पालन दुश्कर हो जाता है। पूर्व की भांति अब आवागमन दुश्कर नहीं रहा। क्योंकि हवाई, रेल एवं सड़क मार्ग अब पहले के अपेक्षा अधिक सुविधाजनक, द्रुतगामी एवं सरल है। लेकिन फिर भी न्यूनाधिक प्रतिकूलता तो रहती ही है। फलतः श्रावक/श्राविकायें, मुनि, आर्यिका माताओं की सतत उपस्थिति का लाभ लेकर धर्माराधन के कार्य में प्रवृत्त होते हैं। अनेक संत आत्मसाधना की दृष्टि से तीर्थों पर अपना वर्षायोग स्थापित करते हैं। इससे तीर्थ विकास के कार्यों को गति मिलती है। जिन तीर्थों पर वर्षायोग हो रहे हैं वहाँ एक अवसर है कि हम साधु और श्रावक बैठकर तीर्थ विकास का मास्टर प्लान बनाये और प्राथमिकता के आधार पर परियोजनाओं का क्रियान्वयन करें। वर्तमान परिदृश्य को देखते हुए वर्षायोग अवधि में कुछ कार्य तीर्थों पर किये जाने चाहिए।

1. तीर्थ के भूअभिलेखों को सुव्यवस्थित कर लेना चाहिए जिससे यह पता चल सके कि हमारे क्षेत्र की भूमि कितनी और कहाँ तक है और यदि उसमें कोई शुल्क आदि जमा करने की शासकीय औपचारिकता शेष है तो उसकी पूर्ति कर लेनी चाहिए।

2. क्षेत्र की भूमि को बाउन्ड्री वॉल बनवा कर उसे सुरक्षित कर लेना चाहिए जिससे यात्रियों एवं उनकी सम्पत्ति की सुरक्षा तो होगी ही वह अतिक्रमण या जबरन कब्जे से भी मुक्त रहेगी।

3. क्षेत्र पर यात्री सुविधायें स्थायी प्रकृति की विकसित करनी चाहिए। यथा शौचालयों एवं स्नानागारों का निर्माण, यात्रियों हेतु कमरों का निर्माण आदि।

4. अल्प विकसित अथवा कम यात्री संख्या वाले तीर्थों पर किसी गरीब दिगम्बर जैन परिवार को क्षेत्र पर निवास की सुविधा देकर उनके माध्यम से भोजनशाला, केन्टिन आदि का संचालन कराया जा सकता है।

5. अधिक यात्री संख्या वाले क्षेत्र पर सशुल्क भोजनशाला की व्यवस्था की जानी चाहिए यह व्यवस्था बिना लाभ हानि के आधार पर किये जाने से क्षेत्र पर कोई वित्तीय बोझ भी नहीं आयेगा तथा यात्रियों को शुद्ध सात्विक भोजन प्राप्त हो जायेगा। गुणवत्ता पर नियंत्रण जरूरी है।

6. क्षेत्र पर यात्री संख्या बढ़ने पर आय में वृद्धि होती है और यात्री संख्या भोजन एवं आवास व्यवस्था पर निर्भर होती है। यदि आप अच्छा भोजन एवं आवास व्यवस्था देंगे तो यात्री संख्या स्वतः निरन्तर बढ़ती रहेगी। संतों की उपस्थिति इस काम में उत्प्रेरक की भूमिका अदा करती है।

7. आने वाले यात्रियों से सम्पर्क करने हेतु एक मैनेजर की बहुत जरूरत होती है जो दान की प्रशस्त प्रेरणा एवं चलने वाली योजनाओं की जानकारी यात्रियों को दे। मैनेजर द्वारा दी गई प्रेरणा दान का निमित्त बनती हैं। क्षेत्र के पदाधिकारी चाह कर भी समय नहीं दे पाते।

8. प्रत्येक तीर्थ पर सुविधानुसार छोटा या बड़ा संत सदन

जरूर बनाना चाहिए। यदि क्षेत्र पर कोई धर्मनिष्ठ परिवार रहता है तो पूजा और भक्ति भी करता है और संतों के चौकों की व्यवस्था भी करता है और क्षेत्र पर रौनक भी रहती है।

9. क्षेत्र पर संचालित योजनाओं की जानकारी देने वाली एक ऐसी लघु पुस्तिका/फोल्डर का प्रकाशन अवश्य करना चाहिये जिसमें मूलनायक भगवान का चित्र क्षेत्र का परिचय, अतिशय तथा अन्य आवश्यक जानकारी हो। यह आकर्षक पुस्तिका क्षेत्र के प्रचार में अहम भूमिका का निर्वाह करती है तथा आपके द्वारा उपलब्ध कराई गई सुविधायें मौखिक प्रचार का एक सशक्त माध्यम बनती है।

विकसित तीर्थ

श्री महावीर जी

नवोदित तीर्थ

श्री शीतलतीर्थ, रतलाम

अतः सभी तीर्थ के प्रबंधकों से अनुरोध है कि वे अपने अपने क्षेत्रों पर किसी न किसी संत का वर्षायोग जरूर कराये। बहुत से संत अंत समय तक मनोनुकूल स्थान का चयन नहीं कर पाते हैं और वह प्रतीक्षा में रहते हैं कि यदि किसी तीर्थ/समाज की ओर से प्रस्ताव मिलता है तो वे 100-150 किमी. का विहार कर भी तीर्थ पर आना पसन्द करते हैं क्योंकि तीर्थों पर संतों की साधना अच्छी होती है। संतों के दर्शन हेतु आने वाले भक्तों को दोहरा लाभ होता है और क्षेत्र के विकास कार्यों को तो पंख लग जाते है। अतः तीर्थों के प्रबंधकों को संतों के वर्षायोग कराने में सदैव सचेष्ट और क्रियाशील रहना चाहिए। किसी भी धार्मिक अनुष्ठान या वर्षायोग में कभी आर्थिक क्षति नहीं होती।

विभिन्न नगरों की समाजें भी वर्षायोग निम्न प्रकार से लाभ ले सकती है।

1. मंदिर में शास्त्र भंडारों को व्यवस्थित करें।
2. युवाओं में झिझक दूर करने हेतु पूजन/अभिषेक प्रशिक्षण शिविर लगाये।
3. युवतियों को जैन धर्म की वैज्ञानिकता का बोध कराये।
4. आहारचर्या के प्रशिक्षण हेतु बहुओं का चौका लगाने का प्रयोगात्मक प्रशिक्षण दे।
5. वरिष्ठ महिलायें युवतियों को पूजन करना एवं दर्शन विधि सिखायें। स्वयं अपने साथ उन्हें बिठाकर सिखायें।

इस प्रकार के अनेक लाभ वर्षायोग में संभव है इसके स्थायी लाभ प्राप्त होंगे।

अनेक नगरों में वर्षायोग की पदचाप सुनाई देने लग गई है। कुछ संत नगरों में आ चुके हैं। कुछ आने वाले हैं। और कुछ अपने निर्धारित वर्षायोग स्थलों की ओर आपके नगर से होते हुए विहार कर रहे हैं। ऐसे संतों की वैयावृत्ति, सेवासुश्रषा आहार विहार की व्यवस्था में प्रत्येक श्रावक को सहभागी होना ही चाहिए। इस निमित्त से बने सम्पर्क आपके जीवन की दिशा बदल देंगे। वर्तमान तनावपूर्ण जीवनशैली में संतों का सान्निध्य एवं आशिर्वाद बहुत उपयोगी है।

डॉ. अनुपम जैन,
ज्ञानछाया, डी-14, सुदामानगर, इन्दौर-452 009 (म.प्र.)
मो.: 94250 53822

राजस्थान के पांच तीर्थक्षेत्रों की स्मरणीय तीर्थयात्रा

अहिंसा तीर्थयात्रा संघ चांदनी चौक के 31 यात्रियों का दल श्री जिनेंद्र जैन, श्री अंकुर जैन, श्री रमेश जैन, एडवोकेट नवभारत टाइम्स, श्री अरविंद जैन, श्री पदम जैन, श्री मनोज, श्री दीपक, श्री अनुज जैन आदि के संयोजन में 26 मई को ट्रेन से कोटा पहुंचकर आर्यिका स्वस्तिभूषण माता जी द्वारा विशाल जलयान के आकार में स्थापित अतिशय क्षेत्र जहाजपुर पहुंचा। वहां बड़े भक्तिभाव से सभी ने भगवान मुनिसुव्रतनाथ की अतिशय पूर्ण रंग बदलने वाली विशाल प्रतिमा के दर्शन कर अभिषेक, शांतिधारा, पूजन किया और

भगवान शांतिनाथ मंदिर व भूगर्भ से प्राप्त अन्य मूर्तियों के दर्शन कर बिजौलिया में रेवानदी के तट पर स्थित भगवान पारसनाथ की कमठ उपसर्ग तपोस्थली व केवलज्ञान भूमि पर स्थित अनेक प्राचीन मंदिरों, गगन विहारी भगवान पारसनाथ की विशाल खड़गासन प्रतिमा, विभिन्न शिलालेखों, समोशरण के दर्शन कर रात को झालरापाटन पहुंचे। यह किले नुमा परकोटे से घिरा जयपुर शहर की तरह बना हुआ समृद्ध नगर है। यहां संवत 1100 का भगवान शांतिनाथ का भव्य प्राचीन दिगंबर जैन मंदिर है, जिसका 92 फुट ऊंचा शिखर खजुराहों के नक्शे पर बना है। यहां भगवान शांतिनाथ की 12-5 फुट की खड़गासन भव्य प्रतिमा के दर्शन करते हुए हटने का मन ही नही हुआ। चारों ओर वेदियां हैं, परिक्रमा पथ इतना विशाल है कि वहां 2000 आदमी आराम से बैठ सकते हैं। बताया गया कि यह प्रतिमा पहले जमीन के अंदर थी, केवल मस्तक व कंठ ही दिखाई देता था, बाद में किसी को सपने देकर यह प्रतिमा प्रकट हुई। मंदिर के मुख्य द्वार पर सूंड उठाए श्वेत रंग के दो विशाल हाथी, लगता है भगवान की स्तुति कर रहे हों।

यहां से चांदखेडी पहुंचकर रात्रि विश्राम कर सुबह को भोंयरे में विराजमान भगवान आदिनाथ की विशाल अत्यंत अतिशयपूर्ण प्रतिमा के दर्शन कर सामूहिक अभिषेक, शांतिधारा व भक्ति की तो सभी भावविभोर हो गए। यहां त्रिकाल चौबीसी व अन्य अनेक मंदिरों, प्रतिमाओं के दर्शन कर केशवरायपाटन पहुंचकर चंबल नदी के तट पर अत्यंत प्राचीन भव्य और विशाल मंदिर में भगवान मुनिसुव्रतनाथ की काले रंग की 9-10वीं शताब्दी की चमत्कारपूर्ण प्रतिमा के दर्शन किए जिस पर मौहम्मद गौरी के हुक्म से तोडने के प्रयास में छैनी हथौडे के निशान देखकर हमारा दिल भर आया। यहां अन्य अनेक प्राचीन प्रतिमाओं के भी दर्शन किए। सभी जगह यात्रियों ने दिल खोलकर दान किया। सभी जगह मैने आदतन सर्व जीव जगत के कल्याण की प्रार्थना की और अद्भुत ऊर्जा से परिपूर्ण होकर हम 28 मई को मध्य रात्रि दिल्ली लौट आए।

- रमेश चंद्र जैन एडवोकेट, नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली

महाकवि आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज का 54वां समाधि दिवस एवं अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद्अधिवेशन सम्पन्न

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद् के तत्त्वावधान में जगत्पूज्य निर्यापक, मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी महाराज एवं क्षुल्लक श्री गंभीरसागर जी महाराज के सान्निध्य में परम पूज्य महाकवि आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज का 54वां समाधि दिवस पूज्य श्री गणेशप्रसाद जी वर्णी द्वारा सन् 1933 में स्थापित श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन संस्कृत विद्यालय परिसर जीवोदय तीर्थक्षेत्र; बरुआसागर, जिला-झांसी (उ.प्र.) में 19 मई, 2023 को मनाया गया। इस अवसर पर अ.भा.दि.जैन विद्वत्परिषद् की साधारण सभा का अधिवेशन सम्पन्न हुआ।

अधिवेशन में सहभागिता करने वाले प्रमुख विद्वान्एवं विदुषियां-

डॉ. जयकुमार जैन-संरक्षक, डॉ. प्राचार्य अरुणकुमार जैन-संरक्षक, प्रो. अशोककुमार जैन-अध्यक्ष, प्रो. सुरेन्द्र जैन 'भारती'-उपाध्यक्ष, प्रो. विजयकुमार जैन-महामन्त्री, डॉ. शैलेशकुमार जैन-उपमन्त्री, डॉ. सुनील जैन 'संचय', पं. शीतलचन्द जैन, वीरेन्द्रकुमार जैन, नवीनकुमार जैन शास्त्री, राजकुमार जैन शास्त्री, जिनेन्द्र सिंघई, सुदर्शन जैन, डॉ.संतोषकुमार जैन, डॉ.आरती जैन, संजीव जैन, अक्षयकुमार जैन, चंद्रेश जैन शास्त्री, डॉ. नीलम जैन सराफ,सुरेन्द्रकुमार जैन, राजेन्द्रकुमार जैन सुमन, प्राचार्य विनीतकुमार जैन,सचिन जैन चिन्मय, अंकुश जैन, डॉ. राका जैन, सुखदेव जैन, डॉ. कल्पना जैन, के.सी.जैन, डॉ. संजय जैन, सतीश जैन, महेन्द्र शास्त्री, जिनेन्द्र शास्त्री, दिनेश जैन, अशोक शास्त्री, पुष्पराज जैन, प्रो.सुभाषचन्द्र जैन, नरेन्द्रकुमार जैन, आलोकजैन मोदी,श्रीमती दीपाली जैन,श्रीमती निकिल जैन,श्रीमती कल्पना जैन, नवीनबाबू जैन, ब्र. अनुराग भैया, श्रीमती शोभा जैन, राजकुमार जैन, अनुराग जैन, अशोककुमार जैन, अशोककुमार जैन, मनोजकुमार जैन, मनोजकुमार जैन। शांतिधारा करने का सौभाग्य विद्वत्परिषद्के संरक्षक जयकुमार जैन, मुजफ्फरनगर एवं प्राचार्य अरुणकुमार जैन, सांगानेर ने प्राप्त किया। मंगलाचरण विदुषी डॉ. राका जैन, लखनऊ ने किया। आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज, आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज तथा मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी महाराज की संगीतमय पूजन की गयी।

महाकवि आचार्य श्री ज्ञानसागर : मेरी दृष्टि पुस्तक का विमोचन

कर्मयोगी डॉ.सुरेन्द्रकुमार जैन 'भारती' द्वारा लिखित एवं डॉ. नरेन्द्रकुमार जैन, सनावद द्वारा सम्पादित महाकवि आचार्य श्री ज्ञानसागर : मेरी दृष्टि पुस्तक का विमोचन डॉ.नरेन्द्रकुमार जैन, बरुआसागर द्वारा किया गया।

विद्वत्परिषद्के मुखपत्र विद्वत्वार्ता का विमोचन - अ.भा.दि.जैन विद्वत्परिषद् के मुखपत्र विद्वत्वार्ता का विमोचन चौधरी विमलेशकुमार जैन, उपाध्यक्ष-श्री दि.जैन जीवोदय तीर्थक्षेत्र, बरुआसागर द्वारा किया गया।

मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी महाराज द्वारा गुणानुवाद - परम पूज्य महाकवि आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज व क्षुल्लक श्री गणेशप्रसाद वर्णी जी का विद्वानों द्वारा गुणानुवाद किया गया। मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी महाराज ने कहा कि दादा गुरु आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज अद्वितीय संत थे।

उनके जीवन से पावर थिंकिंग की शिक्षा लेनी चाहिए। वह 20वीं सदी के महान जैन आचार्य थे। उन्होंने जयोदय, वीरोदय जैसे महान संस्कृत महाकाव्यों की रचना की। उनका जीवन संघर्षपूर्ण था लेकिन वे कभी अपने पथ से डिगे नहीं, डरे नहीं।

कार्यक्रम का संचालन डॉ.विजयकुमार जैन, महामन्त्री, डॉ. सुरेन्द्र जैन 'भारती', बुरहानपुर, डॉ. शैलेश जैन शास्त्री ने किया।

विनयांजलि एवं गुणानुवाद सभा - दि. 19 मई, 2023 को दोपहर में 2:30 बजे से परम पूज्य मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी महाराज एवं क्षुल्लक श्री गंभीरसागर जी महाराज के सान्निध्य तथा प्रो. अशोककुमार जैन, अध्यक्ष-अ.भा.दि.जैन विद्वत्परिषद् की अध्यक्षता में विनयांजलि एवं गुणानुवाद सभा आयोजित की गयी। मंगलाचरण पं.अशोक जैन शास्त्री, इन्दौर ने किया। विद्वानों ने अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किए-

डॉ. जयकुमार जैन, मुजफ्फरनगर- महाकवि आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज का काव्य कालिदास के समान उच्चकोटि का था इसलिए विद्वानों ने उन्हें वृहत्चतुष्टयी में शामिल किया।

प्राचार्य अरुणकुमार जैन, सांगानेर- महाकवि आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज एवं श्री गणेशप्रसाद जी वर्णी के अवदान को भूला नहीं जा सकता। वे जन-जन के संत थे।

प्रो. अशोककुमार जैन, वाराणसी- महाकवि आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज के साहित्य को प्रकाश में लाने और विद्वानों द्वारा उन पर समीक्षाएं करवाने का श्रेय परम पूज्य मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी महाराज को जाता है। आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज ने अचेतन कृतियों के साथ चेतन कृति के रूप में आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज को दिया और विद्यासागर जी महाराज ने मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी के रूप में हमें ऐसे गुरु दिये जिनके कारण आज देव-शास्त्र और गुरु सुरक्षित हुए हैं।

प्रो. विजयकुमार जैन, नई दिल्ली- मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी महाराज इस समय लोकमान्य हैं। उनके द्वारा बरुआसागर स्थित विद्यालय को जीवोदय तीर्थ के रूप में विकास की प्रेरणा स्तुत्य है।

प्रो. सुरेन्द्र जैन 'भारती', बुरहानपुर- महाकवि आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज ने चेतन कृति के रूप में आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज को दिया और आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी

महाराज जैसे सन्त दिये जिनके पुरुषार्थ से आज सैकड़ों तीर्थ अपनी आभा और धर्म प्रभावना को प्राप्त हुए हैं। वे जहाँ जाते हैं इतिहास रच देते हैं। उनके जैसा सन्त दुर्लभ है। विरोधी पक्ष उनके आगे सदैव नतमस्तक होता रहा है और होता रहेगा; क्योंकि वे अपने गुरु आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के पदचिह्नों पर चल रहे हैं और जो करते हैं वह आगम सम्मत ही करते हैं।

डॉ. शैलेशकुमार जैन, बासंवाड़ा- महाकवि आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज के पदचिह्नों पर चलते हुए मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी महाराज ने अपनी चर्या में समयसार को जीवन्त किया है।

पं. संजीवकुमार जैन, महरौनी- मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी महाराज ने जैनधर्म और समाज को प्रतिष्ठित किया है। आज वे जन- जन की श्रद्धा के केन्द्र हैं।

डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर- मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी महाराज ही वर्णी जी के द्वारा स्थापित संस्थाओं को पुनर्जीवित कर सकते हैं। जो असाध्य कार्य है वह उनके लिए साध्य है। डॉ. संतोषकुमार जैन, सीकर-आज भारतवर्ष के हर तीर्थ और समाज मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी महाराज का इंतजार करते हैं कि वे आएं और हमें प्रतिष्ठित करें। उनकी वाणी को पूरा विश्व प्रतिदिन सुनता है।

ब्र. अन्नू भैया, ललितपुर- तीर्थ एवं समाज के विकास में मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी महाराज का महान्योगदान है। हमें उनके प्रति सदा बहुमान रखना चाहिए कि वे हैं तो हम हैं।

पं. चंद्रेश जैन शास्त्री, ग्वालियर- श्री गणेशप्रसाद जी वर्णी बुन्देलखण्ड के प्राण हैं। उनके द्वारा स्थापित संस्थाओं में उनके प्राण बसते हैं। हम विद्वत्परिषद्के सहयोग से वर्णी विकास सभा के माध्यम से वर्णी जी के जन्म स्थान हँसेरा (मड़ावरा के समीप) का विकास कर रहे हैं।

प्रतिष्ठाचार्य मनोज शास्त्री, बमरोही- बरुआसागर स्थित श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन संस्कृत विद्यालय ने मुझे शिक्षित किया हम इसके प्रति सदा उपकारी का भाव रखते हुए सहयोग हेतु तत्पर रहेंगे।

पं. सुखदेव जैन, सागर- महाकवि आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज, महाकवि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज एवं मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी महाराज ने हमें पद और प्रतिष्ठा का भान कराया और जैनत्व को परिभाषित कर संस्कारित किया।

डॉ. नीलम जैन सराफ, ललितपुर- मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी महाराज ने हम सब को दान के संस्कार दिये हैं। हमारे जीवन में जो सुख है वह इसी दान का परिणाम है।

डॉ. कल्पना जैन, नोयडा- आचार्य ज्ञानसागर जी महाराज व गणेशप्रसाद वर्णी जी के अवदान को कोई भूल नहीं सकता। उन्होंने हमें ज्ञान और संस्कार दिये हैं।

विद्वत्श्री अशोक शास्त्री, इन्दौर- चमत्कार को बताना नहीं पड़ता वह जब होता है तो सबको दिखता है। आज राजस्थान, गुजरात, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश; सब जगह देख लो एक ही बात दिखाई देती है कि जहाँ मुनिपुंगव निर्यापक सन्त श्री सुधासागर जी महाराज हैं वहाँ चमत्कार निश्चित हैं।

गुणानुवाद सभा का संचालन डॉ. सुरेन्द्र जैन भारती, उपाध्यक्ष एवं प्रो. विजयकुमार जैन, महामन्त्री ने किया। विद्वत्श्री अशोक जैन शास्त्री, इन्दौर के मंगलाचरण के उपरांत सभी विद्वानों एवं विदुषियों का स्वागत डॉ. नरेन्द्रकुमार जैन, चौधरी विमलेशकुमार जैन, चौधरी संदीप जैन, चौधरी संजय जैन आदि समाजजनों ने किया। अधिवेशन का संचालन महामन्त्री प्रो. विजयकुमार जैन, लखनऊ ने किया। अधिवेशन में विगत कार्यवाही का वाचन एवं पुष्टि, वर्ष-2023-24 के बजट का निर्धारण, वर्ष- 2022-23 के आय-व्यय की पुष्टि तथा पूर्व में किये गये कार्यों की पुष्टि की गयी।

अध्यक्षीय व्याख्यान में विद्वत्परिषद्के अध्यक्ष प्रो. अशोककुमार जैन ने कहा कि-हम सब वर्ष 2023 को अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद्का हीरक जयंती-अमृत महोत्सव वर्ष मना रहे हैं। इस वर्ष विद्वत्परिषद् की स्थापना के प्रेरणा स्रोत श्री गणेशप्रसाद जी वर्णी का 450वाँ जन्मदिवस भी हम सब मनायेंगे। हमारे विद्वानों ने श्रुत की अपूर्व सेवा की है। हमारे लिए यह गौरव की बात है कि अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद्के सिर पर परम पूज्य निर्यापक मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी महाराज का वरदहस्त एवं शुभाशीर्वाद प्राप्त है और उन्हीं की विशेष प्रेरणा से विद्वत्परिषद्विद्वानों के संगठन, उत्थान, सत्कार पुरस्कार आदि कार्य कर पा रही है। हम सब विद्वान्उनके प्रति नतमस्तक हैं। उनके उपकार को मानते हैं। अपने शुभाशीर्वचन में परम पूज्य मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी महाराज ने कहा कि आज जो विद्वान्यहाँ बैठे हैं वे या तो वर्णी जी की देन हैं या श्रमण संस्कृति संस्थान की देन हैं। मैं चाहता हूँ कि वर्णी जी द्वारा स्थापित सभी विद्यालय और संस्थान जीवन्त हों। मैं बनारस में स्थित स्याद्वाद महाविद्यालय एवं श्री गणेश वर्णी शोध संस्थान,नरिया सहित साढूमल, बरुआसागर, सागर आदि सभी संस्थाओं के विकास की भावना रखता हूँ। मैं उन कमेटियों को अपना आशीर्वाद देता हूँ जो समर्पण भाव से आगे आते हैं। ऐसे लोगों से बचने की भी आवश्यकता है जो स्वयं कुछ करते नहीं और कोई करे तो करने देते नहीं। आज आवश्यकता है कि व्यक्ति पूजा के स्थान पर कृतित्व की पूजा हो। मैं संपूर्ण विद्वत्परिषद्को आशीर्वाद देता हूँ कि आप लोग श्रमण संस्कृति के संस्कार लेकर देव-शास्त्र-गुरु का संरक्षण करें और अपने आपको प्रामाणिक बनाए रखें। महामन्त्री प्रो.विजयकुमार जैन ने जीवोदय तीर्थक्षेत्र एवं विद्यालय समिति के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया और कहा कि आगत चातुर्मास काल में विद्त्परिषद्का हीरक जयंती-अमृत महोत्सव मनाया जायेगा जिसमें विशेष रूप से विद्वत्परिषद् के पूर्व अध्यक्ष एवं वर्तमान संरक्षक **डॉ. रमेशचन्द जैन का अनेकान्त मनीषी डॉ.रमेशचन्द जैन अभिनन्दन ग्रंथ प्रकाशित कर अभिनन्दन किया जायेगा।**

प्रशममूर्ति आचार्य श्री 108 शान्ति सागर जी महाराज 'छाणी'

संकलन - समीर जैन (दिल्ली)

परम पूज्य आचार्य श्री 108 शान्ति सागर जी महाराज 'छाणी' का जन्म सन 1888 में कार्तिक बदी ग्यारस को राजस्थान प्रान्त के उदयपुर नगर के समीप स्थित छाणी ग्राम में हुआ था। आपने सन 1922 में क्षुल्लक दीक्षा ग्रहण की तथा एक वर्ष पश्चात ही सन 1923 में भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी तदनुसार 24 सितम्बर 1923 को राजस्थान के सागवाड़ा नगर में मुनि दीक्षा अंगीकार कर आत्म-कल्याण के मार्ग पर आरुढ़ हुए। मुनि रूप में आपने दिगम्बर मुनि की चर्या, उनके मूलगुणों की साधना तथा उनके तपश्चर्या के विविध आयामों से जैन समाज को परिचित करवाया।

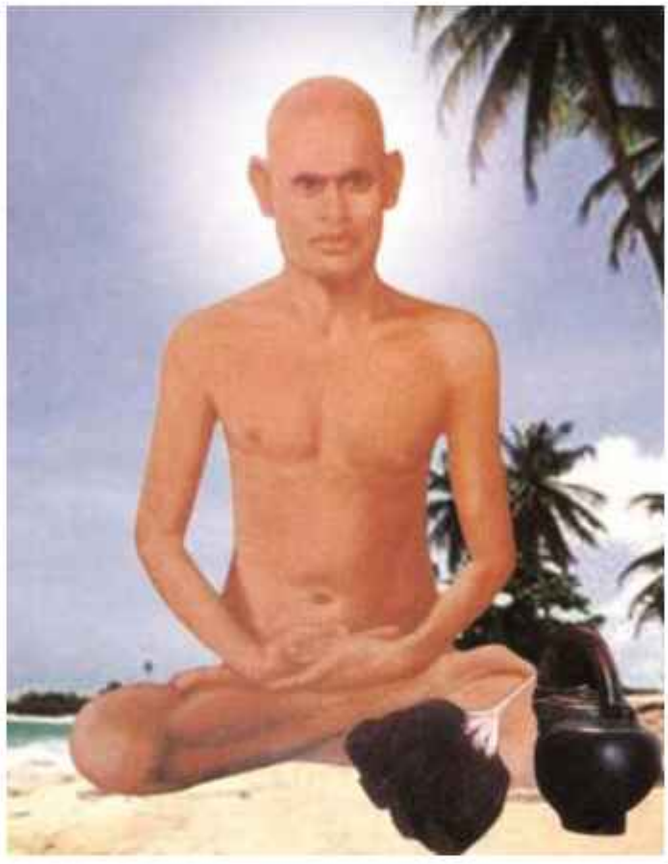

इस परंपरा के पंचम पट्टाधीश परम पूज्य आचार्य श्री 108 विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज के प्रमुख शिष्य **परम पूज्य आचार्य श्री 108 अतिवीर जी मुनिराज** ने पूज्य आचार्य-प्रवर के समाधि दिवस के अवसर पर उनके चरणों में अपनी विनयांजलि अर्पित करते हुए बताया कि आचार्य श्री 108 शान्ति सागर जी महाराज 'छाणी' ने उत्तर भारत में भ्रमण कर मुनि परंपरा को संरक्षित एवं व्यवस्थित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यद्यपि आचार्य श्री को दीक्षोपरांत मात्र 22 वर्ष ही धर्म प्रचार हेतु मिले परन्तु जैन मुनि परंपरा में उनका योगदान अत्यंत विशिष्ट है। आपने 1923 से लेकर 1944 के मध्य लगभग समस्त उत्तर भारत में दिगम्बर जैन मुनि के रूप में सतत विहार किया।

आप एक सच्चे समाज सुधारक थे तथा आपने समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने का साहसिक प्रयत्न किया। मृत्यु उपरांत छाती पीटने की प्रथा, दहेज़ प्रथा, बलि प्रथा, कन्या विक्रय प्रथा, विधवा स्त्री को काले कपडे पहनाने की प्रथा आदि की घोर भर्त्सना की। आपके अहिंसात्मक एवं धर्ममय प्रवचनों के माध्यम से इन कुप्रथाओं पर बंदिश लगी। गिरिडीह (झारखण्ड) प्रवास के दौरान आपके संस्कारित प्रवचनों से प्रभावित होकर एवं आगमोक्त चर्या को देखकर स्थानीय समाज ने सन 1926 में आपको आचार्य पद से सुशोभित किया।

आचार्य श्री 108 शान्ति सागर जी महाराज 'छाणी', प्रथम ऐसे दिगम्बर मुनिराज थे जिन्होंने उत्तर भारत के नगरों की दूर-दूर तक पदयात्रा करके दिगम्बर साधु के विहार का मार्ग प्रशस्त किया। आपने सन 1926 में अपने संघ सहित कानपुर, लखनऊ, गोरखपुर, अयोध्या और बनारस आदि प्रमुख नगरों में धर्मप्रभावना करते हुए शाश्वत तीर्थाधिराज श्री सम्मेद शिखर जी की ओर मंगल विहार किया था। इस अभूतपूर्व यात्रा घटनाक्रम के विषय में आचार्य श्री की जीवन-परिचय पुस्तिका में उद्धृत है कि "मुनिसंघ के आगमन का समाचार सुनकर बीसपंथी कोठी के मुनीम तथा हजारीबाग के जैन श्रावक शिखरजी से हाथी लेकर मुनिसंघ की अगवानी के लिए उनके पास आये। और कहने लगे कि प्रभावना के निमित्त से हम हाथी लाये हैं क्योंकि पिछले सौ-डेढ़ सौ वर्षों के बीच अभी तक कोई मुनिराज यहाँ नहीं पधारे।

राजस्थान के ब्यावर में इस युग के दो महान आचार्य - चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री 108 शान्ति सागर जी महाराज 'दक्षिण' एवं प्रशममूर्ति आचार्य श्री 108 शान्ति सागर जी महाराज 'छाणी' का वर्षायोग एक साथ सानंद संपन्न हुआ। दोनों अभ्रथ संतों ने समत्व की अभूतपूर्व साधना की। दोनों आचार्यों ने समता और समन्वय का पाठ पढ़ाया एवं जन-जन को संस्कारित किया। बिना किसी पंथ भेद के, बिना किसी विभाव के - सिर्फ और सिर्फ सद्भाव। आपके धर्मप्रेरक उपदेशों से प्रभावित होकर समाज ने अनेक विद्यालय, धर्मपाठशालायें, वाचनालय, साधना आश्रम तथा साहित्य प्रकाशक संस्थाओं की स्थापना की।

सन 1944 में ज्येष्ठ बदी दशमी तदनुसार दिनांक 17 मई 1944 को राजस्थान के सागवाड़ा नगर में समाधिपूर्वक मरण कर इस नश्वर देह का त्याग किया। पूज्य आचार्य श्री का जितना विशाल एवं अगाध व्यक्तित्व था, उनका कृतित्व उससे भी अधिक विशाल था। आचार्य श्री के कर-कमलों द्वारा अनेक भव्य जीवों ने जैनेश्वरी दीक्षा अंगीकार कर अपना जीवन धन्य किया। इस गौरवशाली महान परम्परा में वर्तमान में सहस्त्राधिक दिगम्बर साधु समस्त भारतवर्ष में धर्मप्रभावना कर रहे हैं तथा भगवान महावीर के संदेशों को जनमानस तक पहुंचा रहे हैं।

सकारात्मक विचारों का महत्व

डॉ. नरेन्द्र जैन भारती, सनावद

मनुष्य के जीवन में धर्म का स्थान महत्त्वपूर्ण है अतः ईश्वरोपासना के लिए व्यक्ति को धर्म अवश्य करना चाहिए। धर्म के बिना जीवन पशु तुल्य है। धर्म से तात्पर्य ईश्वरोपासना है। ईश्वरोपासना का तात्पर्य है निस्वार्थ भाव से भगवान के गुणों का स्मरण। जिन भव्य आत्माओं ने निस्वार्थ होकर तब आराधना की। भक्ति में श्रद्धा और समर्पण का भाव दिखाया। सांसारिक सुख-दुखों में उदासीन रहकर धर्म का कर्म किया, उसका जीवन ही सार्थक है।

धर्म करने के लिए मानव जीवन ही श्रेष्ठ है। चौरासी लाख योनियों में परिभ्रमण कर जन्म मृत्यु को दुख उठाता है लेकिन जब मनुष्य गति में आता है तभी उसे धर्म पुरुषार्थ करने के साधन मिलते हैं। मनुष्यों की स्थिति भी यह है कि जिनका भाग्य प्रबल होता है उसे अभिषेक, जिनभक्ति, पूजा-पाठ स्वाध्याय के साधन मिलते हैं, नहीं तो आज भी कई व्यक्ति मंदिरों में जाकर देव आराधना नहीं कर सकते। जिनमें श्रद्धा और विश्वास की भावना प्रबल होती है वह पूर्व जन्म में संचित मिलन वासनाओं, सुख -दुख, शोक भय व अशुद्ध कारणों को पीछे धकेल कर भगवान की भक्ति करता है। भक्ति पर विश्वास भाव ही सकारात्मक फल देता है। धर्म को ध्यान में रखकर ही हम कर्म को सार्थक करते हुए भाग्य को बदल सकते हैं। भाग्य से कभी कर्मों का संबंध नहीं है कर्मों के माध्यम से जीव भाग्य का निर्माण करता है। भाग्य से कभी कर्म नहीं बदलता, व्यक्ति को हमेशा सत्कर्म करना चाहिए। कर्म पर भरोसा रख कर पुरुषार्थ के लिए सदैव तत्पर रहने वाले व्यक्तियों के लिए सफलता का मार्ग अवश्य मिलता है।

मनुष्य की स्थिति यह है कि वह दुख में भगवान का स्मरण करता है परंतु जैसे ही सुख की शुरुआत होती है वह भगवान को भूल जाता है धर्म से दूर हो जाता है। अपनी आस्था, भक्ति और समर्पण भाव के प्रति भी शंकालु बन जाता है, जो कालांतर में विपरीत दिशा में कार्य करने के लिए प्रेरित करता है। यही विचार उसके अधोगति में जाने का कारण बनते हैं। अतः विपरीत परिस्थितियों में भी व्यक्ति को भगवान की भक्ति में विश्वास रखकर धर्म करना चाहिए क्योंकि धर्म के बिना मानव जीवन में सुख शांति संभव नहीं है। धर्म से ही संसार को सुख तथा मोक्ष की प्राप्ति होती है। धर्म के बिना मनुष्य का जीवन पशु तुल्य होता है। अगर हम पशु समान ही जीवन व्यतीत करें। हिंसा अहिंसा, सत्य, असत्य, न्याय अन्याय में भेद बिना जीवन व्यतीत करते रहेंगे तो ऐसा जीवन पशु तुल्य ही होता है। संसार में जिन्होंने पशु के रूप में जन्म लिया है वह सिर्फ भोजन भरण-पोषण की तलाश में दिन रात भटकते रहते हैं और उसी तलाश में उनका जीवन समाप्त हो जाता है जिनका पुण्य प्रबल होता है वह तीर्थंकरों केवलियों और रिद्धि सिद्धि धारी मनुष्यों के संबोधन स धर्म मार्ग पर आ जाते है लेकिन ऐसे जीवों की गणना बहुत कम है अधिकांश पशु तो भोजन की तलाश में ही जीवन व्यतीत कर देते हैं। अतः मनुष्य जीवन यदि मिला है तो सत्कर्म के माध्यम से जीवन व्यतीत कर मानव जीवन को सार्थक बनाना चाहिए। मद्य मांस मदिरा, तंबाकू जैसे व्यक्तियों को छोड़कर देव पूजा, गुरु उपासना, स्वाध्याय, संयम, तप और ध्यान रूप धार्मिक क्रियाओं को प्राथमिकता देकर श्रावकोचित कार्य कर मानव जीवन को सार्थक करना चाहिए। मनुष्य के जीवन में धर्म का अत्यधिक महत्त्व है अतः जितना भी समय मिले उसमें धर्म साधना तथा भगवान के गुणों की प्राप्ति के लिए ईश्वरोपासना कर अपनी आत्मा को परमात्मा पद में लाने का पुरुषार्थ करना चाहिए।

दक्षिण पूर्व एशिया की विलुप्त आर्हत् संस्कृति का विमोचन
ऋषभांचल तीर्थ में डॉ.मुरली मनोहर जोशी ने की प्रशंसा

दिल्ली मेरठ मार्ग पर स्थित ध्यान योग दि.जैन तीर्थ श्री ऋषभांचल, वर्धमानपुरम गाजियाबाद में जैन दर्शन के प्रख्यात मनीषी वरिष्ठ विद्वान डॉ. नरेन्द्रकुमार जैन गाजियाबाद द्वारा लिखित अद्भुद व अविस्मरणीय कृति 'दक्षिण पूर्व एशिया की विलुप्त आर्हत् संस्कृति' का विमोचन भारत

सरकार के पूर्व मानव संसाधन विकास मंत्री डॉ.मुरली मनोहर जोशी ने किया । मंच पर उन्होंने पुस्तक का अवलोकन कर पुस्तक के लेखक डॉ. नरेन्द्र जैन के श्रमसाध्य कार्य की प्रशंसा करते हुए कहा कि पुस्तक अत्यंत ही सुंदर है व साथ ही यह बताती है कि हमारी प्राचीन संस्कृति विश्व व्यापी थी ।

ऋषभांचल तीर्थ की संप्रेरिका अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी बा.ब्र.माँ श्री कौशल ने पुस्तक की प्रशंसा करते हुए कहा कि पुस्तक के नाम में 'आर्हत' शब्द बताता है कि यह पुस्तक बहुत ही श्रम पूर्वक लिखी गई है ।

अनेक पुस्तकों व शोध लेखों के लेखक कुशल वक्ता, पुरातत्व अन्वेषी वरिष्ठ विद्वान डॉ.नरेन्द्र कुमार जैन ने बताया कि यात्रा वृतांत पर आधारित इस पुस्तक में कंबोडिया, थाइलैण्ड आदि देशों के साथ दक्षिण एशिया, युरोप, अफ्रीका के कुछ देशों के पुरातात्विक स्थलों का जैन आर्हत श्रमण संस्कृति विषयक विश्लेषण किया गया है । पुस्तक का प्रकाशन आचार्य कुन्दकुन्द जैन विद्या केन्द्र कविनगर गाजियाबाद से किया गया है । उल्लेखनीय है कि जैसा कि हम सुनते है कि जैन धर्म विश्वव्यापी था, उस खोज को यह पुस्तक प्रमाणिकता प्रदान करती है । लेखक डॉ.नरेन्द्रकुमार जैन ने महासभा के यशस्वी अध्यक्ष रहे स्व. निर्मलकुमारजी सेठी के साथ अनेकों बार इन स्थानों की यात्रा की व जैन श्रावकों के नियमों का पालन करते हुए महिनों फलाहार पर या भूखे रहकर जंगलों में जा–जाकर भाषा भिन्नता के बावजूद जैन आर्हत श्रमण संस्कृति को खोज निकाला । पुस्तक विमोचन अवसर पर दिल्ली विधायक दिनेश गोयल, तीर्थ अध्यक्ष जीवेन्द्र जैन, वरिष्ठ विद्वान प्रो.फूलचंद 'प्रेमी' वाराणसी, डॉ.अनेकांत जैन दिल्ली, राजेन्द्र जैन महावीर सनावद, शैलेन्द्र जैन लखनऊ, वीरेन्द्र जैन टीकमगढ़, हेमचंद जैन, आर.सी.जैन, अजय जैन पत्रकार, प्रदीप जैन महामंत्री कविनगर सहित अनेक श्रेष्ठी महानुभाव उपस्थित थे । संचालन श्री जीवेन्द्र जैन ने किया ।

राजेन्द्र जैन 'महावीर'

श्रवणबेलगोल में बाहुबली और अनंतवीर्य ग्रंथो का विमोचन

बुधवार दिनांक 24-05-2023 को श्री क्षेत्र श्रवणबेलगोल चंद्रप्रभु जिनमंदिर में शाम को 7 बजे श्रुतपंचमी के शुभ अवसर पर, जैन अध्ययन संस्थान से प्रकटित "बाहुबली और अनंतवीर्य' ग्रंथो का विमोचन स्वस्ति श्री अभिनव चारुकीर्ति भट्टारक महास्वामीजी ने किया।

प्राकृताचार्य 108 सुनिलसागर महाराज इन ग्रंथों के मूल लेखक हैं। जिन्होंने प्राकृत और हिंदी भाषाओं में इनकी रचना की है। इन दोनों ग्रंथो का कन्नड भाषा में अनुवाद बाहुबली प्राकृत विद्यापीठ, निष्सार, प्राकृत एवं हिंदी भाषा के अध्यक्ष, जैन अध्ययन संस्थान के सदस्य डॉ. राजेंद्र पाटील शास्त्री ने किया है। कार्यक्रम में शास्त्री जी ने ग्रंथों का परिचय दिया। जैन अध्ययन संस्थान के निदेशक डॉ. वृषभकुमार और डॉ. राजेंद्र पाटील शास्त्री को इस संदर्भ में सन्मान कियागया।

हुब्ली के धर्मानुरागी श्रीमती सुजाता मन्मथ गुग्गरी और बेंगलोर के धर्मानुरागी श्रीमती वसंत कुमारी सतेन्द्र जैन ग्रंथ प्रकशनार्थ आर्थिक सहायता की है। इनको कार्यक्रम में धन्यवाद समर्पण कियागया। स्वस्ति श्री अभिनव चारुकीर्ति भट्टारक महास्वामीजी ने मंगल आशीर्वाद दिए। गोमटेश्वर विद्यापीठ के प्रांशुपाल श्री राजेश शास्त्री ने कार्यक्रम का संचालन किया। इस कार्यक्रम में गोम्मटवाणी पत्रिका के संपादक श्री एस.एन. अशोक कुमार, पूर्व प्रसारणाधिकारी श्रीमति जीवरतन राजेंद्र पाटील, महिला समाज के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष पदधिकारी, श्रावक श्राविका उपस्थित थे।

डॉ. राजेंद्र पाटील शास्त्री -
अध्यक्ष प्राकृत एवं हिंदी भाषा विभाग, श्रवणबेलगोला

उदयपुर में होगा आचार्य श्री वर्द्धमान सागर जी महाराज का चातुर्मास

उदयपुर। चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की परंपरा के पट्टाचार्य वात्सल्य वारिधि आचार्य श्री वर्द्धमान सागर जी महाराज का वर्ष 2023 का मंगल चातुर्मास राजस्थान की धर्मप्राण नगरी उदयपुर में होगा।

मेवाड़ बागड़ की राजधानी उदयपुर नगरी में चातुर्मास करने की घोषणा खुद आचार्यश्री ने अपने श्रीमुख से की है। घोषणा को सुनकर उदयपुर वासी जयकारा करने लगे और अपने सौभाग्य की सराहना करने लगे।

-डॉ सुनील जैन संचय ललितपुर

वर्णी जी द्वारा १९४४ में संस्थापित उदासीन आश्रम, सागर

- डॉ.पी.सी.जैन, सागर

(लेखक शासकीय महाविद्यालय के सेवानिवृत्त प्राचार्य हैं, गणित के विद्वान हैं। तीर्थों एवं सामाजिक समस्याओं के अनेक लेखों के लेखक हैं। २००४ में सेवानिवृत्त हुए। श्री दिगम्बर जैन शांति निकुंज उदासीन आश्रम सागर के मंत्री हैं। वर्णी बाग का पूरा परिसर डॉ. जैन के सोच का परिणाम है, वर्णी के अनन्य भक्त हैं- सम्पादक)

इकतीस वर्ष की अवस्था में वर्णी ने सागर में श्री सत्तर्कसुधा तारंगणीय विद्यालय की स्थापना १९०५ में की एवं सन् १९३८ में महिलाश्रम प्रारंभ हुआ। दोनों संस्थाओं का प्रारंभ किराये के मकान में हुआ एवं आज सर्वरूप से स्वतंत्र हैं। समाज सेवा में लगी हैं।

आपके कार्य उपदेश से सागर धर्मनगरी बन गयी एवं भारत के नक्शे पर आ गई।

छात्रों एवं महिलाओं के उत्थान से गृहस्थों में अपने जीवन के संध्या काल को श्रेष्ठ बनाने के उद्देश्य से अपने लिए कुछ हो, यह भावना प्लावित होने लगी एवं कुछ करने को वर्णी जी के चरणों में बार-बार जाने लगे। यह वह समय था जब वर्णी जी का अधिकांश समय सागर में ही बीतता था। एवं बड़े पंडितजी के नाम से वह राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर चुके थे। वर्णी जी उदासीन आश्रम खोलने के पक्ष में नहीं थे यह बात उनके पत्रों में स्पष्ट झलकती है। गृहस्थों का आग्रह वह टाल नहीं सके एवं अपनी सहमति दे दी। आषाढ सुदी ७ विक्रम संवत २००१ में उदासीन आश्रम की स्थापना की गई। उदासीन आश्रम जौहरी बाग (जौहरी गुलाबचन्द का बगीचा) में प्रारंभ हुआ। इस स्थान को शांन्ति निकुंज कहा गया। संस्था की पहली बैठक १३ अगस्त १९४४, भाद्रपद बदी १० वीर निर्वाण संवत २४७० को जौहरी बाग में श्री मुन्नालालजी बैशाखिया की अध्यक्षता में हुई। वर्णी जी स्वयं उस बैठक में रहे। संस्था के स्थापना पदाधिकारी अध्यक्ष सेठ भगवानदासजी बीड़ी वाले, मंत्री, पं. दामोदर दास बनाये गये। ब्र. धरमचन्द। सहजपुर पहले ब्रह्मचारी बने। संस्था को उन्होंने एक हजार रुपया दान दिया। ब्रह्मचारियों की संख्या बढ़ती गई, २० तक हो गई। समाज द्वारा वर्णी जी को दिये गये वचन के अनुसार त्यागियों का भोजन गृहस्थों के आमंत्रण पर निज निवास पर होता था। यह क्रम निर्बाध रूप से १९५० तक चला। तदोपरान्त आश्रम में भोजनशाला प्रारंभ हुई। ब्रह्मचारियों के अध्यापन की

व्यवस्था भी चलती रही।पं. पन्नालालजी साहित्याचार्य एवं पं. माणिकचंदजी काव्यतीर्थ ने कार्य निरन्तर संभाला।

उदासीन आश्रम के प्रारंभ होते ही वर्णीजी के निरन्तर यहाँ रहने के कारण समाज एवं व्रतियों का तीर्थ स्थल बन गया। श्री सहजानन्द वर्णी दीपचन्द वर्णी, ब्र. पूरनचंद, ब्र. छोटेलाल जी ब्र. शीतल प्रसाद आदि यहाँ रहे।

२३ जून १९५४ को स्वतंत्रता आन्दोलन में बाल्य अवस्था में सम्मिलित हुए डालचन्द जी भारत के स्वतंत्र होने पर १९४७ में रायपुर जेल से मुक्त हुए, जीवन की नई डगर तलाशते रहे और आश्रम को अपना स्थान बना ब्रह्मचारी हो गये। आश्रम में आ गये। उस समय ब्र. बालचन्दजी अधिष्ठाता थे। ब्र. डालचन्द जीवनभर उदासीन आश्रम सागर में रहे। शासन ने उन्हें स्वतंत्रता संग्राम सेनानी माना, सुविधायें का उन्होंने लगभग उपयोग नहीं किया। जीवनभर यहां रहे। आश्रम की सम्पत्ति भूमि को सुरक्षित रखने एवं भगवान शान्तिनाथ जैन मंदिर के निर्माण में उनकी भूमिका भुलाई ही नहीं जा सकती। यह पूरा जिनालय ब्र. डालचंद जी ने निर्माण लगे पूरे जल को अपने हाथ से सावाधानी से छानकर लगाया ऐसा आचार्य श्री विद्यासागर जी ने १९८० में सागर में षटखण्डागम की पहली सार्वजनिक वाचना की। अपने उपदेश में ब्राह्मी विद्या आश्रम का संकेत दिया एवं संचालिका आशा मलैया के आवेदन पर, शांति निकुंज परिसर में ब्राह्मी विद्या आश्रम भवन के निर्माण का कार्य प्रारंभ हुआ। पूरे निर्माण में श्री धर्मचंद सोधिया, श्री गुलाबचंद पटना वाले, श्री शिखरचंद सराफ (मंत्री) का सक्रिय योगदान रहा। १५ जनवरी १९८७ गुरुवार को आश्रम में बहनों का प्रवेश हुआ। आश्रम की अनेक बहनें आज आर्यिका हैं।

शांति निकुंज में भगवान शान्तिनाथ जिनालय की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा फरवरी १९८४ में सम्पन्न हुई। उस अवसर पर मूडबद्री कर्नाटक के भट्टारक चारुकीर्ति पंडिताचार्य वर्धस्वामी जी पधारे।

सन् २०१४ में मुनि श्री क्षमासागर जी का चातुर्मास यहां हुआ। मुनि श्री अत्यंत अस्वस्थ थे, यह उनका अंतिम चर्तुमास रहा। वैयावृत्ति के प्रति ऐसा गृहस्थों का समर्पण जिन्होंने जाना/ देखा उसे आत्मसात किया।

सन् २०१९ में श्री महेश बिलहरा के परिवार ने ७०x३२ के प्रवचन हाल का निर्माण मूलबेदी के सामने का कराया।

सन् २०२२ में कुंडलपुर के पंच कल्याणक महामहोत्सव में आचार्य श्री विद्यासागर जी ने तीन जगह साधिका आश्रम की स्थापना की चर्चा पंचकल्याणक के प्रवचनों के मध्य की। एक स्थान उनमें सागर चिन्हित हुआ। सागर में यह स्थान शान्ति निकुंज परिसर उदासीन आश्रम वर्णीबाग को मिला। सागर में ही जन्मी आर्यिका दृढमति जी को उसकी स्थापना एवं संचालन का भार सौंपा गया।

आर्यिका श्री २ अप्रैल २०२२ को ससंघ यहां आई। साथ ही २० साध्वियों का समूह यहां पहुंचा। साधिका आश्रम का कार्य दो मंजला १०८x६३ फुट का निर्माण कार्य प्रारंभ हुआ। शीघ्र ही पूर्ण हो जावेगा।

यह संस्था स्थापना से अभी तक जैन धर्म के मूल सिद्धान्तों पर

व्यवहारिक रूप से चल रही है। धन संग्रह के प्रति उदासीन है। आश्रम की भूमि का व्यवसायिक उपयोग नहीं करती है। अनेकों दबावों के बावजूद संस्था परिसर सिर्फ धार्मिक कार्यो में उपयोग में आता है। शान्ति निकुंज नाम के अनुरूप यहाँ शांतिपूर्ण प्राकृतिक वातावरण है। दोनों खेतों के चारों तरफ स्वतंत्र घूमने के दो पथों का निर्माण किया गया। जिनका उपयोग स्वाथ्य लाभ के लिए होता है।

कोरोना काल में प्राकृतिक प्राण वायु एवं गुरुबेल, पतीते के पत्तों को बड़ी संस्था में लोगों ने प्राप्त कर जीवन की रक्षा की। उदासीन आश्रम ने यहाँ

निवासरत ब्र. डालचन्दजी के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के लिये शासन से प्राप्त फोन/गैस/सेवक की सुविधाओं की उनके समाधिस्थ होने के दिन से ही त्याग दिया। वर्णी जी के चादरदान पर आजादी के अमृत महोत्सव पर शासन के डाक विभाग द्वारा जारी किये गये पोस्टल कवर का शानदार प्रदर्श के रूप में रुपान्तरित कर वर्णी जी के द्वारा स्थापित संस्थाओं को सम्मान सहित संस्था के प्रवेश द्वार को समाहित कर भेजकर उनकी यशकीर्ति के प्रसारण एवं व्यापीकरण, का सफल प्रयास किया। संस्था के परिसर में संस्था का पूरा नाम, अहसास में आता है। वर्णीजी के अनेक पत्र मूल रूप में फोटो आफसेट में बड़े रूप में संस्था में लगे हैं आकर्षण का केन्द्र है। शान्ति निकुंज वर्णीबाग वर्णी जी की निरन्तर अनुभूति कराता है। संस्था की करीब २एकड़ भूमि बाउन्ड्र वाल के अंदर सागौन, इमली, बेर, कैथा, आम, बेल, गुलमोहर के वृक्षों के समूह से भरी है।

"नवीन संसद भवन के ऐतिहासिक उद्घाटन समारोह में डॉ. इन्दु जैन राष्ट्र गौरव के स्वर में गूँजी जैनधर्म की प्रार्थना"

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदीजी ने विभिन्न धर्मों के प्रख्यात धर्माचार्यों तथा लोकसभा व राज्यसभा के सदस्यों की उपस्थिति में नए संसद भवन का उद्घाटन एवं पवित्र सेंगोल को स्थापित कर भारत के इतिहास में एक नए अध्याय का सूत्रपात किया। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने भारत देश को लोकतंत्र का भव्य मंदिर समर्पित कर दिया। इस ऐतिहासिक अवसर पर लोकसभा के अध्यक्ष श्री ओम बिड़ला जी, राज्यसभा के उपसभापति श्री हरिवंश, श्री अमित शाह, श्री राजनाथ सिंह, श्री योगी आदित्यनाथ, श्रीमती मीनाक्षी लेखी, श्रीमती आनंदीबेन पटेल, श्री प्रहलाद पटेल एवं केन्द्रीय मंत्रिमंडल के सदस्य व सांसद मौजूद रहे।

नवीन संसद भवन के ऐतिहासिक उद्घाटन समारोह के पावन अवसर पर आयोजित "सर्वधर्म प्रार्थना सभा" में सभी धर्म के प्रतिनिधियों ने अपने धार्मिक ग्रंथों से विशेष प्रार्थनाएं कीं। इस गौरवपूर्ण समारोह में जैनधर्म का प्रतिनिधित्व करते हुए डॉ० इन्दु जैन राष्ट्र गौरव ने सम्पूर्ण जैन समाज की ओर से भारत की भूमि को नमन किया तथा सभी का अभिवादन "णमो जिणाणं-जय जिनेन्द्र" से किया। आपने आचार्य कुन्दकुन्द विरचित 'प्रवचनसार' की सर्वप्राचीन प्राकृत भाषा में गाथा एवं संस्कृत में मंगलाष्टक, महावीराष्टक श्लोक का सस्वर पाठ किया तथा भगवान महावीर के 2550वें निर्वाण उत्सव पर पूरे विश्व में अहिंसा की स्थापना हो इस भावना का उद्घोष किया। उद्घाटन समारोह के पश्चात् जब डॉ० इन्दु जैन ने सांसदों एवं गणमान्य अतिथियों से मुलाकात की तो सभी ने उनकी प्रस्तुति की प्रशंसा की तथा भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं दीं। जब जैनधर्म की प्रार्थना नवीन संसद भवन में गूँज रही थी तब पूरे विश्व की जैन समाज के लिए ये बेहद ही गौरवांवित पल था।

सर्वधर्म प्रार्थना में आचार्य लोकेश मुनि ने भी विशेष प्रार्थना की तथा सभी धर्मगुरुओं ने अपने धर्म का प्रतिनिधित्व करते हुए बौद्ध प्रार्थना, ईसाई प्रार्थना, पारसी प्रार्थना, बहाई प्रार्थना, यहूदी प्रार्थना, गीता पाठ, कुरआन शरीफ से पाठ, गुरु ग्रन्थ साहिब से पाठ, शब्द कीर्तन आदि का वाचन विश्व कल्याण की भावना से किया। इस अवसर पर भारतीय डाक टिकट एवं वित्त मंत्रालय द्वारा मुद्रा सिक्का भी जारी किया गया। लोकसभाध्यक्ष श्री ओम बिरला एवं राज्य सभा के उपसभापति श्री हरिवंश ने विचार व्यक्त किये। राज्यसभा के उपसभापति श्री हरिवंश ने महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू व उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़के संदेश का वाचन भी किया।

कार्यक्रम के पश्चात् जब कई न्यूज़ चैनल ने सभी धर्मों के प्रतिनिधियों से बातचीत की। जब संवाददाता ने डॉ० इन्दु से इस ऐतिहासिक क्षण के अनुभव पूछे तो उन्होंने माननीय प्रधानमंत्री जी का हार्दिक आभार अभिनंदन करते हुए उनके मन में स्थापित सर्वधर्मसमभाव एवं भारत को विश्वगुरु बनाने की भावना की अनुमोदना की। डॉ० इन्दु ने मीडिया से बातचीत करते हुए कहा कि जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ के ज्येष्ठ पुत्र भरत चक्रवर्ती जिनके नाम पर इस देश का नाम भारत हुआ, ऐसी पवित्र भारत भूमि पर लोकतंत्र का नया मंदिर भव्य रूप में स्थापित हो चुका है और मेरे लिए अविस्मरणीय क्षण हैं कि नवीन संसद भवन के भूमि पूजन एवं उद् घाटन समारोह दोनों ऐतिहासिक अवसरों पर मुझे जैनधर्म का प्रतिनिधित्व करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आपने समाचार चैनल के प्रश्नों के उत्तर देते हुए कहा कि यदि सभी लोग 'अहिंसा परमो धर्मः' , 'जीयो और जीने दो', 'अनेकांतवाद', माध्यस्थभाव आदि के दृष्टिकोण रखें और तो विश्व में सभी समस्याओं का समाधान सम्भव है।

ज्ञातव्य है कि जैनदर्शन, प्राकृत भाषा के प्रसिद्ध विद्वान प्रो. फूलचन्द जैन 'प्रेमी' एवं विदुषी डॉ. मुन्नी पुष्पा जैन, वाराणसी की सुपुत्री तथा समाजसेवी श्री राकेश जैन की जीवनसंगिनी डॉ० इन्दु जैनधर्म-दर्शन-संस्कृति, प्राकृत संस्कृत हिन्दी- अपभ्रंश भाषा एवं साहित्य, ब्राह्मी लिपि, शाकाहार तथा भारतीय संस्कृति के संरक्षण-संवर्धन के लिए राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय रूप में निरंतर प्रचार-प्रसार का कार्य कर रहीं हैं। डॉ. इन्दु अनेक पुरस्कारों से सम्मानित हो चुकीं हैं तथा कई वर्षों से माननीय राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री एवं विशिष्ट जनों के सानिध्य में सरकार द्वारा आयोजित "सर्वधर्म प्रार्थना" सभा में "जैनधर्म" का प्रतिनिधित्व कर ...

विख्यात विद्वान व लेखक डॉ. कपूर चंद्र जैन स्मृति ग्रन्थ का हुआ भव्य लोकार्पण

डॉ कपूरचंद जी ने कपूर की भांति चारों ओर सुगंधि फैलाई : मुनि पुण्यसागर जी

मूर्धन्य मनीषी तथा अद्भुत प्रतिभा के धनी थे डॉ कपूरचंद जैन : गणिनी आर्यिका स्वस्ति भूषण

श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र सोनागिर जी में मूर्धन्य मनीषी श्रद्धेय डॉ. कपूरचंद जैन खतौली के स्मृति ग्रन्थ का भव्य विमोचन समारोह पूज्य मुनि श्री पुण्य सागर जी महाराज ससंघ व गणनी आर्यिका स्वस्ति भूषण माता जी के ससंघ सान्निध्य में शास्त्रि परिषद के अध्यक्ष डॉ. श्रेयांस कुमार जी जैन बड़ौत की अध्यक्षता में भारत सरकार के पूर्व केंद्रीय मंत्री प्रदीप जैन 'आदित्य' के विशिष्ट आतिथ्य में दोपहर दो बजे से सम्पन्न हुआ।

सर्व प्रथम श्रीमती ज्योति जैन झांसी व पंडित पवन दीवान मुरैना एवं डॉ कपूर चंद्र जी खतौली के परिजनों ने मंगलाचरण किया। इसके बाद विद्वानों, अतिथियों आदि ने चित्र अनावरण व दीप प्रज्वलन किया। इस मौके पर मुनि श्री पुण्य सागर जी महाराज ने कहा कि डॉ. कपूर चंद्र जी खतौली ने कपूर की तरह दशों दिशाएं सुगंधित की। भले ही वे हमारे बीच नहीं हैं लेकिन उनके कार्य उन्हें सदैव जीवंत बनाए रखेंगे। वे चिंतन शील मनीषी थे। गणिनी आर्यिका स्वस्ति भूषण माता जी ने कहा कि डॉ. कपूर चंद्र जी जितने दिन जिए शान से जिए। वे मूर्धन्य मनीषी तथा अद्भुत प्रतिभा के धनी थे। वे विविध विद्याओं में पारंगत, अनोखे विषय पर अनोखे कार्य करने वाले मनीषी थे।

प्रारंभ में डॉ. जय कुमार जैन मुज्जफरनगर ने डॉ. कपूर चंद्र जी का खतौली का परिचय देते हुए उनके जीवन से जुड़े संस्मरण सुनाए।

विशिष्ट अतिथि पूर्व केंद्रीय मंत्री प्रदीप जैन 'आदित्य' झांसी ने डॉ कपूर चंद्र जी के अवदान को ऐतिहासिक बताया तथा **उनकी स्मृति में बुंदेलखंड विश्विद्यालय झांसी में एक शोध पीठ स्थापना की बात कही।**

समारोह का संचालन पंडित विनोद जैन रजवांस व श्री राजेन्द्र महावीर सनावद ने संयुक्त रूप से किया। आभार डॉ. ज्योति जैन खतौली ने व्यक्त किया। डॉ. कपूर चंद्र जैन के भाई सुमत जैन सीए झांसी ने अपने अनेक संस्मरण सुनाते हुए उन्हें जीवन निर्माता बताया।

शास्त्रि परिषद के अध्यक्ष डॉ श्रेयांस कुमार जैन बड़ौत ने कहा कि अपने को तिल तिल गलाकर साहित्य साधना करने वाले सरस्वती के वरद पुत्र डॉ. कपूर चंद्र जैन के द्वारा नयी-नयी विधाओं पर कार्य किए गए।

डॉ. शीतल चंद्र जैन प्राचार्य जयपुर ने कहा कि स्वतंत्रता संग्राम में जैन उनकी 700 पृष्ठों की कृति ऐतिहासिक दस्तावेज बन गयी है। इस पुस्तक को तैयार करने में उन्होंने अथक श्रम किया है।

शास्त्रि परिषद के महामंत्री ब्र. जय कुमार जी निशांत भैया टीकमगढ़ ने कहा कि वे सहज- सरल मनीषी थे इसलिए उनका इसलिए कोई विरोधी नहीं था। शास्त्रि परिषद के वे उपाध्यक्ष व पुरस्कार संयोजक रहे। वे पूरे जीवन प्रभावना व साहित्य सपर्या में संलग्न रहे।

प्राचार्य अरुण जैन सांगानेर ने कहा कि मध्यप्रदेश के दतिया मंडल के वरधुआ नामक छोटे से गांव में जन्में डॉ जैन ने शिक्षा और समाज के क्षेत्र में अनेक महत्वपूर्ण कार्य किए जो सदैव स्मरणीय रहेंगे।

डॉ. सुरेन्द्र जैन भारती बुरहानपुर ने कहा कि उनके साथ मेरा भाई जैसा संबंध था। वे सरल और सहज थे। वे आज भी याद हैं और कभी भूलेंगे भी नहीं।

प्रोफेसर विजय कुमार जैन लखनऊ ने डॉ साब को बड़ा भाई बताते हुए उनकी साहित्य सपर्या को याद किया साथ ही प्रोफेसर वृषभ प्रसाद जी लखनऊ के अवदान को रेखांकित करते हुए उनके द्वारा कोरोना काल में चलाई गई अक्षय आहार की योजना को महत्वपूर्ण बताया।

डॉ. ब्र. राकेश भैया सागर ने विलक्षण प्रतिभा के धनी डॉ कपूर चंद्र जी ने जैन विद्या शोध संदर्भ पुस्तक तैयार कर महत्वपूर्ण कार्य किया, यह पुस्तक शोधार्थियों के लिए वरदान साबित हुई।

दैनिक विश्व परिवार के संपादक प्रवीण जैन झांसी ने कहा कि ज्ञान यज्ञ में अनूठी आहुति देने वाले डॉ साब सरलता की प्रतिमूर्ति थे।

डॉ. सुनील 'संचय' ललितपुर ने कहा कि डॉ. कपूर चंद्र जी की कृतियाँ श्रम साध्य, व्यय साध्य और समय साध्य थीं। वे अजातशत्रु थे। उनकी कालजयी कृतियां ऐतिहासिक दस्तावेज हैं, जिनसे वे सदैव अमर रहेंगे।

इस अवसर पर जसवीर राणा, डॉ ज्योति जैन खतौली, डॉ चंद्र मोहन जैन, कार्तिक जैन, अनिकेत जैन, विभु जैन, वैभव जैन आदि वक्ताओं ने अपने विचार रखे।

स्मृति ग्रंथ का विमोचन मंचासीन अतिथियों, विद्वानों एवं परिजनों ने किया।

स्मृति ग्रंथ के प्रधान संपादक डॉ श्रेयांस कुमार जैन बड़ौत, संपादक मंडल ब्र. जय कुमार निशांत जी, पंडित विनोद कुमार जैन रजवांस, डॉ सुरेन्द्र जैन भारती, ब्र. जिनेश मलैया, प्रबंध संपादक सुमत चंद्र जैन सीए, डॉ ज्योति जैन, सह संपादक राजेन्द्र जैन महावीर, डॉ सुनील संचय, डॉ चंद्रमोहन जैन, जसवीर राणा, परामर्श मंडल के डॉ शीतल चंद्र जैन, डॉ जय कुमार जैन, प्राचार्य अरुण जैन एवं संयोजक मंडल के नीरज जैन, कार्तिक जैन, अनिकेत जैन, विभु जैन, वैभव जैन आदि को सम्मानित किया गया।

उल्लेखनीय है कि अनेक पुरस्कारों से अलंकृत डॉ कपूरचंद जी खतौली ने स्वतंत्रता संग्राम में जैन, प्राकृत एवं जैन विद्या शोध संदर्भ, संविधान विषयक जैन अवधारणाएं, धवल कीर्तिमान, जैन विरासत जैसी कालजयी कृतियों का प्रणयन कर अमूल्य योगदान दिया है। उनकी धर्मपत्नी डॉ ज्योति जैन जी भी एक विदुषी हैं। उन्होंने छाया की तरह उनके कार्यों में योगदान दिया। डॉ साब के जाने के बाद वे निरंतर सक्रिय होकर डॉ साब के पद

चिन्हों पर चल रहीं हैं।

इस अवसर पर देश भर के विभिन्न अंचलों से आमंत्रित 125 विद्वानों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

समारोह में डॉ कपूरचंद जैन खतौली के जीवनवृत्त पर एलईडी के माध्यम से उनके जीवन के विविध पक्षों को दिखाया गया।

इस मौके पर कमल चंद जी अहमदाबाद, नरेंद्र भंडारी, अमित भंडारी ,रसम भंडारी, सुमित कुमार सीए ,संजीव कुमार, अमित कुमार, आशीष कुमार, प्रमोद कुमार हैदराबाद, संजीव कुमार खंडवा, श्रीमती कल्पना, बेबी, श्रुति ,अनंत ,रोमी, प्रियंका ,ऋषि, राखी, रेसी, दीपू ,उदित ,कार्तिक, अनिकेत, पंडित वीरेश कानपुर, आमोद कानपुर , प्रकाशजी झांसी , मीहिका जैन, अरहम जैन आदि परिजन प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

प्रोफेसर वृषभ प्रसाद जी लखनऊ स्मृति विशेषांक 'बुलेटिन' का हुआ विमोचन : इस मौके पर शाखि परिषद के उपाध्यक्ष रहे प्रोफेसर वृषभ प्रसाद जी लखनऊ स्मृति विशेषांक 'बुलेटिन' का भी विमोचन किया गया।

इस मौके पर विद्वानों ने कहा कि प्रोफेसर वृषभ प्रसाद जी लखनऊ भाषा शास्त्र के बहुत बड़े विद्वान थे। उनका अवदान भी अविस्मरणीय है। इन्होंने भाषा के विकास में अतुलनीय योगदान दिया है। आपका जन्म एटा में 2 जनवरी 1959 को हुआ। आप प्रसिद्ध विद्वान बाबू कामता प्रसाद जी के सुपौत्र थे। मंत्र विज्ञान और ज्योतिष के भी अच्छे विद्वान थे। कोरोना काल में आपने अक्षय योजना के माध्यम से जो रसोई संचालित कराई उससे हजारों लोग लाभान्वित हुए। अनेक बार विदेश जाकर प्रभावना की। आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का स्नेह और वात्सल्य उन्हें विशेष रूप से मिलता रहा। उन्होंने अनेक कृतियों का प्रणयन किया। उनके असामयिक निधन से अपूरणीय क्षति हुई है।

इस मौके पर प्रोफेसर वृषभ प्रसाद जी की धर्मपत्नी एवं प्रोफेसर विजय कुमार जैन , डॉ राका जैन, डॉ पत्रिका जैन आदि उनके परिजन प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

दिल्ली के तीर्थ पर होगा आचार्य अतिवीर मुनिराज का चातुर्मास

प्रशममूर्ति आचार्य श्री 108 शान्तिसागर जी महाराज (छाणी) परम्परा के प्रमुख संत परम पूज्य आचार्य श्री 108 अतिवीर जी मुनिराज का आगामी चातुर्मास 2023 राजधानी दिल्ली की हृदय स्थली चांदनी चौक स्थित अतिशयकारी व ऐतिहासिक तीर्थ श्री दिगम्बर जैन लाल मन्दिर में होने जा रहा है। इस मंगल घोषणा से समस्त दिल्ली जैन समाज में हर्ष व आनंद छा गया।

पिछले कई वर्षों से समस्त दिल्ली की जैन समाज आचार्य श्री से दिल्ली के ऐतिहासिक तीर्थ पर चातुर्मास करने हेतु निरंतर निवेदन करते आ रहे हैं। इस वर्ष भक्तों की अत्यन्त प्रबल भावना को देखते हुए आचार्य श्री ने अपना आगामी चातुर्मास अतिशय क्षेत्र लाल मन्दिर, चांदनी चौक में करने की सहर्ष स्वीकृति प्रदान की।

आचार्य श्री ने धर्मसभा के मध्य कहा कि गुरुवर आचार्य श्री 108 विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज ने वर्ष 2007 में स्वतंत्र विहार करने के लिए अपना आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा था कि जीवन में जब भी अवसर मिले एक बार लाल मन्दिर में चातुर्मास अवश्य ही करना। इस वर्ष यह सुअवसर आया है और आचार्य अतिवीर मुनिराज ने अपने गुरुवर आचार्य श्री को याद करते हुए अपना यह चातुर्मास गुरु-चरणों में समर्पित किया।

स्वर्ण जयंती वर्ष संपूर्ति समारोह सम्पन्न

श्री गणेश वर्णी दिगंबर जैन संस्थान के स्वर्ण जयंती वर्ष का समारोह का समापन कार्यक्रम दिनांक 28 मई, 2023 को संगोष्ठी सभागार आ.यु.सि.टी सुंदरपुर में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में दिगंबर जैन महासमिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मणीन्द्र जैन , तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री ऋषभचंद जैन, उपाध्यक्ष जैन समाज उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री केशवदेव जैन ने की इस अवसर पर जैन कल्याणक क्षेत्र द्वारा सीमा जैन- धीरज जैन तथा सितारा शिखर का द्वारा श्रीमती आशा जैन इन दोनों पुस्तकों का विमोचन किया गया तथा प्राकृतिक भाषा के छात्र छात्राओं को प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। इस अवसर पर संस्थान के पिक्चर पोस्ट कार्ड का अनावरण श्री विजय कुमार जैन तथा प्रोफेसर एन के जैन ने किया। संस्थान का परिचय एवं स्वागत प्रोफेसर अशोक कुमार जैन रुड़की पंडित फूलचंद सिद्धान्त शास्त्री का साहित्यिक अवदान प्रोफेसर फूलचंद प्रेमी जैन के तथा वर्णी जी के द्वारा साहित्यिक अवदान के बारे में अशोक कुमार जैन बीएचयू ने विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया। प्रो कमलेश कुमार जैन ने संस्थान के पचास वर्ष की यात्रा का सारांश प्रस्तुत किया ।श्रीमती प्रमिला सामरिया अध्यक्ष श्री दिगंबर जैन महिला मंडल के निर्देशन

में आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रतिभाशाली बच्चियों ने प्रस्तुत किया। संपूर्ण समारोह का सफल संचालन प्रो अशोक कुमार जैन बीएचयू द्वारा किया गया ।इस अवसर पर प्रोफेसर शांति स्वरूप सिन्हा, प्रोफेसर जगदीश राय, प्रोफेसर अनिल जैन, श्री सौरभ जैन, डा आनंद जैन , डा विवेकानंद जैन, श्री प्रभात जैन , श्री सुरेन्द्र जैन, श्री उत्कर्ष जैन, श्री किशोरकांत गोरावाला, श्री सौरभ जैन, श्री सौरभ जैन सिंघई, श्री विजय कुमार जैन, श्री राकेश जैन, डॉ. के के जैन, पंडित मनीष जैन, श्री पद्मचंद जैन, श्री अमित जैन आदि उपस्थित रहे।

-डॉ. अशोककुमार जैन, वाराणसी

देवआस्था पुस्तकालय द्वारा साहित्यकार हरिविष्णु अवस्थी जी को "बुंदेली संस्कृति के आचार्य" एवं कर्मशील रत्न नारीशक्ति उपाधि से डॉ.प्रीति सुरेंद्र सिंह परमार को उपाधि से सम्मानित किया

देवआस्था पुस्तकालय टीकमगढ़ मे विगत दिवस पर मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्जवलित कर शुभारंभ के साथ भव्य दिव्य कार्यक्रम साहित्यकार हरिविष्णु अवस्थी जी को "बुंदेली संस्कृति के आचार्य" का सम्मान समारोह मे मुख्यअतिथि, श्री नरेन्द्र मोहन अवस्थी जी पूर्व प्राचार्य शा.महाविद्यालय, श्रीमती गीता माझी जी मुख्यनगरपालिका अधिकारी टीकमगढ़, अध्यक्षता,श्रीमती रेखा महेश यादव जनपद अध्यक्ष जतारा, विषिष्टअतिथि, श्रीमती श्रद्धा चौहान जी अध्यक्ष मातृ शक्ति संगठन बृद्धाश्रम समिति टीकमगढ़, श्रीमती रश्मि शुक्ला जी शैक्षणिक प्रमुख मानवाधिकार एशोसियेशन टीकमगढ़,श्रीमती सुषमा संजय नायक उपाध्यक्ष नगरपालिका टीकमगढ एवं कर्मशील रत्न नारीशक्ति" उपाधि से डॉ.प्रीति सुरेंद्र सिंह परमार सम्मानित कार्यक्रम देवआस्था पुस्तकालय मे किया गया जहां सम्मान समारोह मुख्य अतिथि - श्रीमती राव रानी ज्योति कुमारी जूदेव धर्मपत्नी स्वर्गीय श्री ज्ञानेंद्र सिंह जूदेव (गिन्नी राजा) पूर्व विधायक टीकमगढ़ ,अध्यक्षता -एडवोकेट शिवकली रूसिया संस्था -धमार्थ न्यास, विशष्ट अतिथि श्रीमती माधुरी महेश गुप्ता रि.शिक्षक निवाडी, श्रीमती निर्मला गुप्ता श्रीमति मुन्नी देवी धर्मपत्नी स्व.श्री लाल जी श्रीवास्तव ,श्रीमती श्वेता अहिरवार जी साथ ही अतिथि-श्रीमति हल्की बाई धर्मपत्नी स्व. श्री कडोरे अहिरवार पूर्व पार्षद, श्रीमति क्रांति बाई जैन धर्मपत्नी स्व.श्री प्रकाश लार पूर्व अध्यक्ष मार्केटिंग सुसाईटी,श्रीमती नफीसा बानो फरीद पार्षद,श्रीमति उषा सुरेंद्र सोनी पार्षद ,श्रीमती रजनी शर्मा धर्मपत्नी स्व.लखन शर्मा (प्रधान आरक्षक) श्रीमति राजकुमारी साहू पूर्व पार्षद, श्रीमति शैल्जा जैन सरपंच हटा, संरक्षक-श्रीमति भागवती देवी घुवारा,कार्यक्रम सयोजक श्रीमती प्रियंका पवनघुवारा भूमिपुत्र सभी अतिथि गणमान्यजनो का स्वागत श्रीमति रोहिणी अभिप्रिसं घुवारा एंव डा.अभिषेक घुवारा द्वारा किया गया है, देवआस्था पुस्तकालय उपस्थित सभी गणमान्यजनो द्वारा गोरतलब है कि देवआस्था पुस्तकालय जैन समाज के गौरव लौहपुरुष स्व.श्री कपूर चन्द्र घुवारा पूर्व विधायक पूर्व विधायक के आशीर्वाद से संचालित है के संस्मरणों को याद के साथ चित्र पर पुष्प अर्पित किये कार्यक्रम का संचालन भूमिपुत्र पवन घुवारा ने कर सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

इंदौर के श्री संजय जैन "मैक्स" का डोंगरगढ़ छत्तीसगढ़ में आचार्य श्री108 विद्यासागरजी महाराज के सानिध्य में समाधि मरण

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी मध्यांचल के पूर्व मंत्री इंदौर रेवती रेंज जिनालय के प्रमुख, सिद्धोदय सिद्ध क्षेत्र नेमावर के प्रमुख, देवरी के मूल निवासी, आचार्य श्री 108 विद्या सागर जी महाराज जी के परम भक्त श्री संजय जी जैन "मैक्स" का डोगरगढ़ छत्तीसगढ़ में आचार्य श्री विद्यासागर महाराज ससंघ के सानिध्य में समता पूर्वक समाधिमरण हो गया है।

श्री संजय जैन "मेक्स" तीर्थ सेवा और जैनधर्म के लिए अनूठे कार्य किये हैं। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार अपनी भावभीनी विनम्र श्रद्धांजली अर्पित करता है।

भव्यातिभव्य १५० प्राचीन ग्रन्थों का विमोचन सानन्द संपन्न हुआ

परम पूज्य अंकलीकर परम्परा के चतुर्थ पट्टाधीश आचार्य श्री सुविधिसागर महाराज द्वारा रचित एवं अनुवादित 150 ग्रन्थ का प्रकाशन श्री क्षेत्र अरिहंतगिरि,तमिलनाडु में भव्य रूप से किया गया।

सुबह 8 बजे से चाँदी की पालखी के साथ ही साथ हाथियों के ऊपर जिनवाणी (ग्रन्थ) विराजमान कर शोभायात्रा निकाली गई। दोपहर 2 बजे से श्रीमती सरिता एम.के. जैन जी द्वारा दीपप्रज्वलन कर कार्यक्रम की शुरुआत की गई। कुमारी पर्याप्ति पापड़ीवाल ने मंगलाचरण की प्रस्तुति दी। तत्पश्चात पूज्य गणिनी आर्यिका सुविधिमती माताजी एवम आर्यिका सुस्नेहमती माताजी ने अपने उद्बोधन में ग्रन्थ सम्पदा एवम 150 ग्रंथों के कार्य के विषय मे सभी श्रावक वर्ग को बताया।

इसके बाद पूज्य आचार्य श्री सुविधिसागर महाराज जी का पादप्रक्षालन सिरायत परिवार (पॉन्डिचेरी), पिच्छी का भेंट श्रीमान प्रसन्नकुमार कासलीवाल परिवार (पॉन्डिचेरी), कमंडल भेंट श्रीमान सुभाषचंद्र कासलीवाल परिवार (पॉन्डिचेरी), शास्त्र भेंट श्रीमान विनोद बाकलीवाल परिवार (पॉन्डिचेरी) एवम सभी माताजी एवम भट्टारक जी को वस्त्र भेंट का सौभाग्य श्रीमान महावीरप्रसाद कासलीवाल परिवार (इचलकरंजी) इनके द्वारा किया गया।

डॉ. श्री धवलकीर्ति भट्टारक

स्वामीजी के हस्ते जैन गजट, तीर्थ वंदना आदि अंको का विमोचन किया गया। 150 ग्रंथों का विमोचन डॉ. जयेश कोठारी सूरत, एवम डॉ. महावीर सोइतकर चंद्रपुर इनके द्वारा भव्य रूप से किया गया।

इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्रीमती कविता जैन का स्वागत कुमारी शिवानी सेठी(औरंगाबाद) द्वारा किया गया।

इस भव्यतिभव्य ऐतिहासिक कार्यक्रम का मूल 150 ग्रंथों के विमोचन का नाम इंडिया बुक्स ऑफ रेकॉर्ड, असिस्ट वर्ल्ड रेकॉर्ड, और रेकॉर्ड रेज़र्स में दर्ज किया गया है।

श्रीमती कविता जैन चेन्नई से इन्होंने इंडिया बुक्स ऑफ रेकॉर्ड का जो - Maximum Granth(Books) on Jainism released in a single day- का सर्टिफिकेट पूज्य आचार्य श्री को दिया।

इस कार्यक्रम में पूज्य आचार्य श्री सुविधिसागर महाराज जी ससंघ, आचार्य श्री गुलाबभूषण महाराज जी, मुनि आमोघकीर्ति महाराज जी, मुनि अमरकीर्ति महाराज जी एवम अनेक भट्टारकों का मंगल सानिध्य प्राप्त हुआ।मुनि अमोघकीर्ति महाराज जी के मंगल उद्बोधन के बाद पूज्य आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज जी ने अपने मंगल प्रवचन में कहा की - आने वाली पीढ़ी को रक्षा करने के लिए यह ग्रन्थ अवश्य सहायता करेंगे। सभी श्रावको को इन ग्रंथों को एकबार अवश्य पढ़ना चाहिए। उन ग्रंथों में कई प्राचीन विशेषताएं बताई गई है, जो हमारे धर्म की रक्षा करने में सफल रहेगी। छोटी छोटी मार्मिक बातो को जानने से सूक्ष्मता का ज्ञान होगा। इन ग्रंथों के कार्य में जिनका जिनका सहयोग मिला उन सभी को आशीर्वाद देकर कार्यक्रम की समाप्ति हुई।

इस भव्य विमोचन कार्यक्रम का माइक संचालन श्रीमान प्रवीण लोहाड़े(औरंगाबाद) इन्होंने किया। इस पूर्ण कार्यक्रम की सूचना श्रीमान विनोद सेठी(औरंगाबाद) इन्होंने दी।

न भूतो, न भविष्यति ऐसे हजारों की संख्या में उपस्थित भक्तों ने इस कार्यक्रम के साक्षी बनकर पुण्यार्जन एवं धर्मलाभ लिया।

णमोकार मंत्र की विश्व स्तरीय पेंटिंग स्थाई रूप से श्री महावीर जी के ध्यान मंदिर में

वरिष्ट जैन पत्रकार श्री जैन कमल द्वारा २३ साल से बन रहे णमोकार पर एक अध्यात्मिक पेंटिंग विश्व की पहली पेंटिंग जो महावीर जी के अध्यक्ष एडवोकेट श्री सुधांशु कासलीवाल जी के मार्ग निर्देशन में स्थाई रूप से श्री महावीर जी के ध्यान केंद्र में स्थापित की गयी है।

यह शैक्षणिक दृष्टिकोण से अद्भुत कार्य है इसके साथ उन्होंने आचार्य श्री सन्मति सागर जी के पट्टशिष्य आचार्य श्री सुनील सागर जी महाराज जी के सानिध्य में जैन कमल जी ने पहले तीर्थंकर आदिनाथ भगवान के समय में लिखी गयी ब्राह्मी लिपि को सीखा जो उडीसा के उदयगिरि-खंडगिरि के अवशेषों में उपलब्ध है, उसी ब्राह्मी लिपि को भी अपनी पेंटिंग में समावेश किया है।

श्री जैन विमल ने विगत १० वर्षों तक सेंसर बोर्ड ऑफ़ इंडिया इन्फोर्मेशन एंड ब्राडकास्टिंग मिनिस्ट्री में ५००० से भी ज्यादा फिल्मों को पास किया, पेंटिंग का अगर वास्तविक रूप में साक्षात्कार करें तो आप को मंदिर या चैत्यालय के दर्शन होने लगेंगे। इस पर अगर आप नजर टिकाएं तो आप ध्यान की अवस्था में पहुँच जायेंगे। सुख-शांति-समृद्धि का अनुभव करने लगेंगे। णमोकार महामंत्र की यह पेंटिंग अक्षर के माध्यम से बनी है और अक्षर से ब्रह्म को पाने की कोशिश की गयी है। इस पेंटिंग को विश्व से कई जगहों से लोग आ कर देख रहे हैं और सराहना भी कर रहे हैं।

इस पेंटिंग को राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, धर्मस्थल के प्रमुख डॉ.डी वीरेंद्र जी हेगड़े, सहित जैन समाज के प्रमुख वरिष्ट महानुभावों ने अवलोकन कर सराहना की है।

अक्षर से ब्रह्म तक... जैन कमल

णमोकार मंत्र के अरिहंत के बिंदु (*) के लाखों टुकड़े को मैग्नीफाइन करके देखें तो उसके लाखों टुकड़े के बराबर भी आप और हम नहीं हैं। ...तो इसके बराबर कौन है? शायद बिसमिल्ला खान, भीमसेन जोशी या सत्यजीत राय सरीखे कुछ लोग होंगे। जैन कमल की नजर में, अंदर के वृत्त में परमपुज्य आचार्य श्री विमलजी, विद्यासागरजी, प्रसन्नसागरजी और साधुगण गण होंगे, और पूरे ब्रह्मांड के अंदर की ओर अरिहंत, सिद्ध, मुनिगण होंगे। बाहर के ब्रह्मांड में हम और आप सभी मंत्र की चुंबकत्व शक्ति में मौजूद होंगे। इस पेंटिंग में पांच तत्व को दर्शाया गया है. (क्षिति, जल, पावक, गगन, समीर) जो भगवान महावीर के गुणों में शामिल है।

सृष्टि का सुंदरतम महामंत्र है- णमोकार मंत्र। मंत्र चाहे कोई भी हो पहले यह उच्चारण में आता है जो धीरे-धीरे मस्तिष्क में जगह बना लेता है। उसके बाद यह अंतर्वाणी बन जाता है। जैसे ही कोई उच्चारण करता है उसका संबंध अंतर से जुड़ जाता है।

मंत्र में शब्द है, अर्थ है, उच्चारण है और भावना है। इसे अवयव भी कहा जाता है। समझा जाता है कि प्राण-विकास का बहुत बड़ा साधन है-शब्द। शब्द की तरंगें हर किसी को प्रभावित करती है। लेकिन एक और तरंग है जो रंगों की है। इन दोनों को प्रकाश की तरंगें कहा जाता है। इन्हीं को जैन कमल ने अपना आधार बनाया है। शब्द और रंग को एक विशेष शैली में बांधा नहीं है बल्कि असीम रूप दिया है।

जैन कमल की किसी भी कलाकृति पर अगर ध्यान लगाएं या फिर खुली आंखों से ही देखें, तो वह आपको सृष्टि के साथ जोड़ देगी। उसके एक-एक बिंदु, एक-एक शब्द, एक-एक रंग में आपको चेतनता नजर आएगी। वह बिजली सा प्रभाव छोड़ने लगती है। मंत्र के बारे में आप कुछ ना भी जानते हों, तब भी आपको मंत्रबद्ध कर देगी इनकी पेंटिंग।

अमूल्य निधि है नवागढ़ की प्राचीन विरासत : आचार्य श्री विभवसागर महाराज

प्रागैतिहासिक तीर्थक्षेत्र नवागढ़ में आचार्य विभवसागर ससंघ का हुआ आगमन

प्रागैतिहासिक अतिशय क्षेत्र नवागढ़ में शब्द शिल्पी आचार्य श्री विभवसागर महाराज का मंगल आगमन संघ सहित हुआ। इस अवसर पर नवागढ़ क्षेत्र कमेटी के पदाधिकारियों ने आचार्य श्री ससंघ की मंगल अगवानी की। नवागढ़ क्षेत्र के निदेशक ब्र. जयकुमार निशांत जी ने बताया कि आचार्य श्री विभव सागर जी ने पूर्व में नवागढ़ अतिशय क्षेत्र में दीर्घकालीन साधना की है।

प्रचार मंत्री डॉ. सुनील संचय ने बताया कि आचार्यश्री द्वारा रचित नवागढ़ क्षेत्र पूजन एवं श्री अरनाथ महामंडल विधान आज सभी की भक्ति का सशक्त आधार है। नवागढ़ में आने वाले भक्त आपकी शब्द संयोजना में अपने भावों को व्यक्त करके आराधना करते हैं। आचार्य श्री विभवसागर महाराज ने ससंघ पुनः पधारकर नवागढ़ क्षेत्र के स्वरूप को देखकर प्रसन्नता व्यक्त की। इस अवसर पर आचार्य श्री विभव सागर जी महाराज ने कहा कि नवागढ़ तीर्थक्षेत्र योजनाबद्ध तरीके से विकास कर रहा है, भारतीय संस्कृति, इतिहास एवं पुरातत्व के साथ-साथ जैन दर्शन, अध्यात्म, साधना एवं समाधि मरण की ओर भक्तों को ले जाने में सार्थक हो रहा है। क्षेत्र के निदेशक ब्र. जय कुमार निशांत भैया नवागढ़ की विरासत को सहेजने में अथक श्रम निरंतर कर रहे हैं।

नवागढ़ क्षेत्र की प्राकृतिक गुफाओं में आज भी वह तरंग ऊर्जा व्याप्त है जो हमारे प्राचीन साधु संतों ने यहां साधना एवं सल्लेखना करके मानव जीवन को सार्थक किया है। नवागढ़ की प्राचीन विरासत हमारी अमूल्य विरासत है। आज पुरानी स्मृतियां पुनः ताजी हुई हैं ।आचार्यश्री ने अरनाथ स्वामी के पादमूल में बैठकर विशेष रचना की है जो शीघ्र ही सभी के समक्ष प्रस्तुत की जाएगी।

इस मौके पर तीर्थक्षेत्र के महामंत्री श्री वीरचंद जैन नेकोरा, श्री अशोक जैन मैनवार, श्री कपूरचंद जैन, श्री राकेश जैन, श्रीमती शशि जैन आदि ने आचार्यश्री की भक्ति का सौभाग्य प्राप्त किया। पाद प्रक्षालन और आरती की गई।

मां की मौत भी हौसला तोड़ न सकी

किसी अपने की मौत का गम इंसान को तोड़ देता है। खासकर नाबालिग बच्चों के लिए मां की मौत के सदमे की कल्पना करना ही भयावह होता है लेकिन आईसीएसई की १०वीं की छात्रा कु.इशिता प्रवीण जैन ने इस सदमे से बहुत कम समय में उबर कर अपनी दिवंगत मां को अनोखी श्रद्धांजलि दी। परीक्षा से २७ दिन पहले कु. इशिता की मां श्रीमती बरखा जैन की मृत्यु हो गई थी। पूरा परिवार गम में डूबा था। इशिता ने अपना हौसला नहीं खोया और आईसीएसई की दसवीं की परीक्षा में ९७ परसेंट अंक हासिल किए। उसके पिता सीए श्री प्रवीण जैन शहर के जाने-माने समाजसेवी हैं श्री चंद्रप्रभ दिगंबर जैन मंदिर, भूलेश्वर तथा श्री आदेश्वर जैन चैरिटिबल ट्रस्ट तथा तीर्थक्षेत्र कमेटी के सदस्य भी हैं। इस रूप में वे कैंसर जागरूकता शिविर, मेडिकल कैंप, किडनी डायलिसिस मरीजों की सेवा, खाद्यान्न वितरण आदि कार्य करते हैं। वे बताते हैं कि इशिता विला थेरेसा हाईस्कूल की छात्रा है। उसकी मां की मृत्यु ३० जनवरी को हो गई थी। उसके २७ दिनों बाद दसवीं की परीक्षा शुरू हुई, जिसमें इशिता ने ९७ फीसदी अंक पाए।

वैभारगिरि : राजगृही के पँच पहाड़ियों में से एक

- सुलभ जैन (बाह)

आज की भाववन्दना एक ऐसे स्थान की है, जिसके बारे में जानकर आप तिहुँलोक में वीतरागी भगवान की महिमा व शाश्वत जिनशासन के महाघोष को जान पाएंगे।

आइये चलते हैं, जिनशासन का परचम लहराती राजगृही के पँच पहाडियो में से एक वैभारगिरी में बनी सोनभण्डार नामक गुफा में जहां निश्चयनय से तो जिनधर्म का खजाना भरा पड़ा है, व व्यवहार नय से राजा बिम्बिसार का लौकिक स्वर्ण भंडार के होने की किवदंती प्रचलित है।

राजगृही नगर में विशाल वैभार गिरि की तलहटी में एक छोटा सा परिसर है जिसके अन्दर दो गुफाएं दिखाई पड़ती हैं। घने जंगल के बीच से सड़क से होता हुआ यह रास्ता सोनभण्डार को गया है।

सोन भण्डार की दोनों गुफाओं का निर्माण ईसा पूर्व चौथी शताब्दी में जैन मुनि वैरदेव ने करवाया था। ये गुफाएं जैन तपस्वियों की साधना स्थली थीं।

किंवदंती है कि मगध नरेश बिम्बिसार का खजाना इन गुफाओं में छिपाया गया था। इसी कारण इन्हें स्वर्ण भण्डार या सोन भण्डार के नाम से जाना जाता है।

यह दुर्लभ गुफा जैन धर्म के मुनि श्री वैरादेव द्वारा संरक्षित थी

वह इस स्थान पर तप व ध्यान साधना करते थे।

ऐसा माना जाता है चट्टान पर शंख लिपि में अंदर के कमरे को खोलने का रहस्य छिपा है। गुफाओं पर सोनेनुमा पेंट किया गया है, जो सदियों से संरक्षित है। माना जाता है कि यह असली सोने की पर्त है।

शंखलिपि एक रहस्यमयी भाषा में लिखी जाती थी। वैसे उस

समय की प्रमुख भाषा ब्राह्मी थी, जो भगवान श्री १००८ आदिनाथ के समय से ही व दुनिया की सबसे पुरानी लिपियों में से एक है। यह शंखलिपि इसी भाषा का संशोधन था।

इस लिपि को समझने का एक मात्र साधन जैन शास्त्रों में विदित था, पर दुर्भाग्य से, कुछ आक्रमणकारियों द्वारा नालंदा विश्वविद्यालय को जलाने के बाद यह समझना ही दुर्लभ हो गया। कहते हैं, नालन्दा विश्वविद्यालय में इतने जैन शास्त्र थे, जो तीन महीनों तक जलते रहे।

सोन भंड़ार गुफ़ा के पास ऐसी ही एक और गुफा है जो दोमंजिला थी जिसमें जैन तीर्थंकरों की प्रतिमायें स्थापित थीं। जो कि आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त हो चुकी है। इसका सामने का हिस्सा गिर चुका है।

इस गुफा की दक्षिणी दीवार पर 6 जैन तीर्थंकरों की मूर्तियां उकेरी गई है। जैन तीर्थंकरों श्री १००८ पद्मप्रभ भगवान, श्री पार्श्वनाथ भगवान, श्री महावीर भगवान और अन्य कई जैन प्रतिमाओं की सुंदर

छवियां हैं, जो दक्षिणी दीवार पर उकेरी गई हैं।

स्थानीय लोगों का यह भी मानना है कि बिम्बिसार के खजाने तक पहुंचने का रास्ता वैभवगिरी पर्वत सागर से होकर सप्तपर्णी गुफाओं तक जाता है, जो सोन भंडार गुफा की दूसरी ओर पहुंचती है। कहा जाता है कि अंग्रेजों ने एक बार तोप से खजाने के दरवाजे को तोड़ने की कोशिश की थी, लेकिन वो इसे तोड़ नहीं पाए। तोप के गोले के निशान आज भी दरवाजे पर मौजूद हैं।

जिस पर्वत में यह गुफा स्थित है उसमे गर्म पानी के स्रोत हैं यानी कि गंधक, अभ्रक तथा अन्य खनिजों का भंडार है। सोन भंडार गुफा में दो कक्ष बने हुए हैं। ये दोनों कक्ष पत्थर की एक चट्टान से बंद हैं। कक्ष सं. 1 माना जाता है कि सुरक्षाकर्मियों का कमरा था जबकि दूसरे कक्ष के बारे में मान्यता है कि इसमें सम्राट बिम्बिसार का खजाना था। कहा जाता है कि अभी भी बिम्बिसार का खजाना इसी कक्ष में बंद है। सोन भण्डार गुफा मे प्रवेश करते ही 10.4 मीटर लम्बा, 5.2 मीटर चोडा तथा 1.5 मीटर ऊंचा एक कक्ष आता है, यह कमरा खजाने की रक्षा करने वाले सैनिकों के लिए था।

सोनभंडार गुफा के बारे में आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के पहले सर्वेयर अलक्जेंडर कनिंघम से लेकर फ्रांसिस बुकानन तक ने लिखा है। फ्रांसिस बुकानन ने 1811-1812 के बीच राजगीर का भी दौरा किया था। इसे क़िताब के रूप में छापा गया है। नाम है, 'ऐन अकाउंट ऑफ द डिस्ट्रिक्ट्स ऑफ बिहार एंड पटना।' इसमें वह लिखते हैं, 'राजगृह में जैन धर्मावलंबियों की पूजा करने की एक ही अतिप्राचीन थी।

इस क्षेत्र के दर्शन कर एक ही भाव मन में आता है, कि ----
"जिनशासन बडा निराला, मानो अमृत का प्याला"
पहुंचने के लिए क्षेत्र की गूगल मैप लिंक
Swarn Bhandar
https://maps.app.goo.gl/wk963ivzFEr3gEB89

प्राचीन नगरी वर्धमानपुरम्

भाववन्दना में चलते हैं, प्राचीन नगरी वर्धमानपुरम... यह नाम सरकारी रिकॉर्ड तक मे नही है, लोगो ने भी इसका नाम नही सुना है। और तो

और गूगल तक मे इसका मूलनाम नही मिलता है,,,,, ऐसी अंजान जगह का इतिहास आज जानते हैं --

भगवान महावीर के नाम से बसा यह प्राचीन वर्धमानपुरम नगर बहुत

समृद्धिशाली, जैनधर्म के तत्कालीन वर्चस्व परिपूर्ण और अति सुंदर मंदिरों वाली नगरी थी। उस समय इस नगर के मंदिरों के समान देश मे कोई भी वास्तुकला नही टिकती थी।

लेकिन काल दोष से एक बार मुगलों के आक्रमण से इस जगह को विध्वंस किया जाने लगा,, सुंदर मन्दिरो को तोड़ा गया, कलाकृतियों को नष्ट किया गया। ओर इस नगरी की सुंदरता के साथ साथ सत्य को भी इतिहास के पन्नो से मिटा दिया गया।

आज इस सत्य को सामने लाना जरूरी है, जिससे आप समझ पाए, कि हमारे शाश्वत जिनशासन को कितने विधर्मियों ने दूषित करने का प्रयास किया, लेकिन जिस प्रकार सूर्य के सामने कुछ बादल आ जाने से उसके प्रकाश में कोई फर्क नही आता, ठीक उसी तरह जिनशासन का सूर्य अनादिकाल से समान चमक बिखेरता रहा है। यही प्रामाणिक सत्य है।

आइये अब जाने इस तीर्थस्थल के बारे में -

श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र, उमता गुजरात

यहां पर खुदाई के दौरान मुख्य भगवान आदिनाथ जी की लगभग 74 मूर्तियों को जमीन से बरामद किया गया है। यहां विकास कार्य प्रगति पर है।

नाम एवं पता - श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, उमता

तहसील - वीसनगर, जिला - मेहसाणा (गुजरात)

पिन - 384 320

टेलीफोन - 096248 30265

क्षेत्र पर उपलब्ध सुविधाएँ

आवास - कमरे (अटैच बाथरूम) - 9, कमरे (बिना बाथरूम) - 2 हाल - 2, गेस्ट हाउस - 01

यात्री ठहराने की कुल क्षमता - 500.

क्षेत्र पर भोजनशाला है।

आवागमन के साधन

रेलवे स्टेशन - वीसनगर - 8 कि.मी.

बस स्टेण्ड - उमता

पहुँचने का सरलतम मार्ग - अहमदाबाद - 105 कि.मी., मेहसाणा - 28 कि.मी. अथवा तारंगाजी - 35 कि.मी.बस द्वारा
निकटतम प्रमुख नगर - विसनगर 8 कि.मी. दक्षिण दिशा
प्रबन्ध व्यवस्था
संस्था - मुनि निर्भय सागर जन कल्याण समिति
अध्यक्ष - श्री सौभाग्य मल कटारिया (079 - 2138301)
मंत्री - श्री एस.एस.जैन (9313770931)
वार्षिक मेला - 28 अप्रैल आचार्य श्री निर्भय सागर दीक्षा दिवस
समीपवर्ती तीर्थक्षेत्र

तारंगा - 35 कि.मी., अंबाजी - 85 कि.मी., माउन्ट आबू - 120 कि.मी., ईडर वडाली - 75 कि.मी., पावागढ़ - 255 कि.मी., गिरनार - 355 कि.मी., पालीताणा - 305 कि.मी. केशरियाजी - 215 कि.मी.
एक बार इस पावन स्थान के दर्शन अवश्य करें।

- सुलभ जैन (वाह)

TMU द्वारा प्रायोजित तीर्थंकर महावीर व्याख्यानमाला के अन्तर्गत प्रथम व्याख्यान 'भारतीय ज्ञान परम्परा एवं जैन साहित्य' पर सम्पन्न

भारतीय ज्ञान परम्परा का उद्देश्य चिन्तन और मनन-डॉ. रेणु जैन

तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय के IKS Centre द्वारा शुरू की गई तीर्थंकर महावीर व्याख्यानमाला के अन्तर्गत प्रथम व्याख्यान भारतीय ज्ञान परम्परा एवं जैन साहित्य विषय पर देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर की कुलपति प्रो. रेणु जैन द्वारा दिया गया। व्याख्यान की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रघुवीर सिंह ने की। विशेष अतिथि के रूप में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली के पूर्व प्रतिकुलपति पद्मभूषण प्रो. कपिल कपूर ऑनलाइन जुड़े। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि 'भारत की ज्ञान परम्परायें संस्कृत, प्राकृत, पाली, कन्नड़ एवं तमिल भाषाओं में सुरक्षित है। हमें इन भाषाओं के प्राचीन साहित्य का अध्ययन और विश्लेषण कर मानवता के हित में भारतीय ज्ञान परम्परा को संरक्षित करना चाहिए। प्रत्येक छात्र को कम से कम एक प्राचीन ग्रंथ अवश्य पढ़ना चाहिए।'

मुख्य वक्ता कुलपति प्रो. रेणु जैन ने कहा कि 'जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ ने असि, मसि, कृषि, विद्या, वाणिज्य और शिल्प रूप छः विद्याओं का उपदेश देकर भारत के सांस्कृतिक विकास का पथ प्रशस्त किया। आपने सम्पूर्ण जैन साहित्य को ४ भागों में विभाजित करते हुए कहा कि इन्हें अनुयोग की संज्ञा दी जाती है। आपने करणानुयोग के अध्ययन की आवश्यकता बताते हुए कहा कि यह दुनिया मानती है कि शून्य का आविष्कार भारत में हुआ था किन्तु किसने (?) इस पर इतिहास मौन है। मुझे यह बताते हुए प्रसन्नता है कि शून्य और अनन्त का गणितीय संदर्भों में व्यापक विवेचन और कुशलतापूर्वक प्रयोग सबसे पहले जैन साहित्य में ही मिलता है। मात्र इतना ही नहीं गणित के क्षेत्र में आज प्रचलित अनेक नियम और सिद्धांत भी सबसे पहले जैन साहित्य में ही पाये जाते है। इन सबका प्रामाणिक रूप से संकलन करके विश्व समुदाय के सामने रखना भारतीयता के गौरव को बढ़ाने के लिये बहुत जरूरी है। भारतीय ज्ञान परम्परा सदैव समभाव की रही है। इसका उद्देश्य मनन एवं चिन्तन है।'

ज्डन के बैंपत च्तवमिवत डॉ. अनुपम जैन प्रो. रेणु जैन का परिचय देते हुए कहा कि वे एक कुशल प्रशासक एवं सफल कुलपति तो है ही अर्न्तराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त प्रसिद्ध गणितज्ञ भी है। भारतीय गणित विशेषत: जैन गणित में उनकी गहन अभिरुचि है। वैयक्तिक जीवन में वे गुरुभक्त, सुश्राविका है। जीवन में यम–नियमों का पालन करने के साथ प्रतिदिन समय निकालकर भगवान जिनेन्द्रदेव का पूजन करती है। आपके मार्गदर्शन में व.टट.प्दकवतम में भारत सरकार द्वारा IKS Centre in Jaina Mathematics की स्थापना हुई है। कार्यक्रम का संचालन Assistant Director Academics श्रीमती नेहा आनंद ने किया तथा आभार कुलसचिव प्रो. आदित्य शर्मा ने माना। प्रो. रेणु जैन का शॉल, श्रीफल एवं प्रतीक चिन्ह से सम्मान किया गया। इस अवसर पर मुख्यत: भारतीय विद्याओं विशेषत: जैन विद्याओं को समर्पित अर्द्धवार्षिक शोध पत्रिका श्रुत के प्रकाशन की घोषणा की गई। जिसका दायित्व चेयर प्रोफेसर डॉ. अनुपम जैन संभालेंगे।

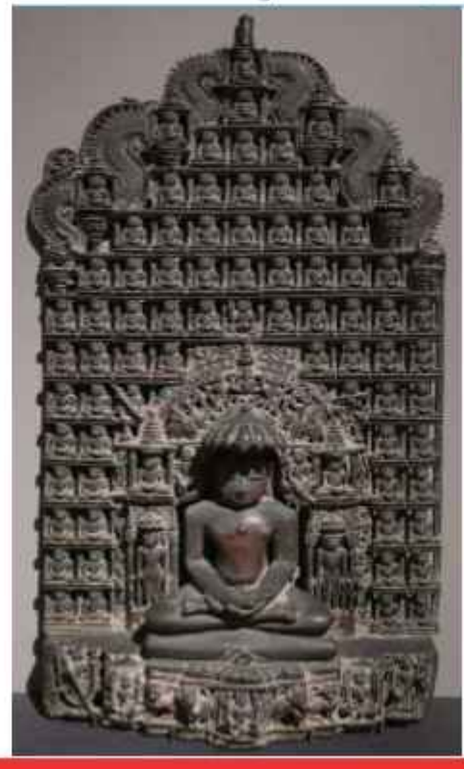

त्रिकाल चौबीसी के 72 तीर्थंकर भगवान की भव्य प्रतिमा जी वर्तमान में - Norton Simon Museum, Art museum in Pasadena, California, USA

एक श्रेष्ठ पठनीय कृति

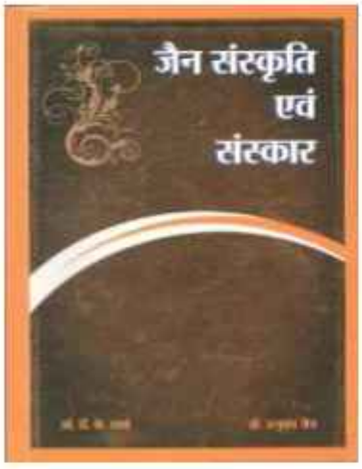

कृति	—	जैन संस्कृति एवं संस्कार (२४ आलेखों का संकलन)
संपादक	—	डी.के. शर्मा एवं अनुपम जैन
प्रकाशक	—	डॉ. बी.आर. अम्बेडकर सा.वि. विश्वविद्यालय, डॉ. अम्बेडकर नगर (महू)
संस्करण	—	प्रथम—२०२२
ISBN	—	९७८.८१.९५११९२.५.७
मूल्य	—	रु. ५००/—
पृष्ठ	—	XVII 212

समीक्ष्य कृति डॉ. बी.आर. अम्बेडकर सा.वि.वि.वि., डॉ. अम्बेडकर नगर (महू) एवं श्रमण संस्कृति विद्यावर्द्धन ट्रस्ट, इन्दौर द्वारा संयुक्त रूप से गोम्मटगिरि—इन्दौर में २४—२६ दिसम्बर २०२१ को आयोजित त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में पठित २४ आलेखों का संकलन है। संगोष्ठी का शीर्षक संस्कृति एवं संस्कार था अत: सभी लेखों का शीर्षक इसी के इर्द—गिर्द है, किन्तु प्रत्येक लेख में लेखक की अपनी—अपनी दृष्टि है निबन्धों के शीर्षक एवं लेखकों के नाम निम्नवत् है:—

१. श्रीमती उषा पाटनी, इन्दौर—छूटते संस्कार—टूटते परिवार

२. डॉ. सुरेखा मिश्रा, इन्दौर—वैदिक एवं श्रमण परम्परा में जीवन के संस्कार

३. पं. सनतकुमार विनोद कुमार जैन, रजवाँस (सागर)—जैन पुराणों में सोलह संस्कार एवं वर्तमान में उपयोगिता

४. पं. सुरेश जैन "मारौरा", इन्दौर—जैन परंपरा में सोलह संस्कार एवं उनकी प्रासंगिकता

५. डॉ. समता जैन, इन्दौर—जैन परंपरा के प्रमुख संस्कार और उनकी प्रासंगिकता

६. पं. शीतलचन्द्र जैन, ललितपुर—जैन जीवन शैली की आधुनिक समय में उपयोगिता

७. डॉ. (श्रीमती) अल्पना अशोक जैन मोदी, ग्वालियर—जैन परम्परा के सोलह संस्कार एवं उनकी प्रासंगिकता

८. डॉ. सविता जैन, रतलाम—जैन आगम में संस्कार

९. श्रीमती रेखा पतंग्या, इन्दौर—जैन जीवन शैली की आधुनिक समय में उपयोगिता

१०. डॉ. वीरेन्द्र जैन, इन्दौर—संस्कारों का अन्तर से संबंध

११. प्रो. प्रभुनारायण मिश्र, इन्दौर—राष्ट्र निर्माण में संस्कारों की भूमिका

१२. डॉ. सूरजमल बोबरा, इन्दौर—जैन जीवन शैली की आधुनिक समय में उपयोगिता

१३. डॉ. मनीषा जैन, टोंकखुर्द (देवास)—जैन संस्कृति की वैज्ञानिकता

१४. डॉ. संगीता मेहता, इन्दौर—जैन जीवन शैली में अहिंसा एवं अनेकान्त

१५. डॉ. रजनी जैन, इन्दौर—जैन जीवन शैली की आधुनिक समय में उपयोगिता

१६. डॉ. अल्पना जैन, मालेगाँव (नासिक)—जैन जीवन शैली की आधुनिक समय में उपयोगिता

१७. डॉ. सुरेन्द्र पाठक, डॉ. अम्बेडकरनगर—संस्कारों का महत्त्व एवं प्रभाव

१८. डॉ. नीरज कुमार जैन, इन्दौर—जैन दर्शन में योग : एक चिन्तनपरक विश्लेषण

१९. डॉ. संजीव सराफ, वाराणसी—जैन संस्कृति के संरक्षण में पुस्तकालयों की भूमिका

२०. डॉ. अनुपम जैन, इन्दौर, जैन जीवन शैली की वर्तमान में प्रासंगिकता

२१. डॉ. शोभा जैन, डॉ. अम्बेडकरनगर—पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का धार्मिक, सामाजिक तथा आर्थिक पक्ष

२२. ब्र. जय कुमार जैन 'निशांत', टीकमगढ़—पंचकल्याणक प्रतिष्ठा विधि में कालक्रम से हुए परिवर्तन

२३. पं. सनतकुमार विनोद कुमार जैन, रजवाँस (सागर)—वर्तमान

में धार्मिक अनुष्ठान, प्रतिष्ठा विधि विधानों में विसंगतियाँ

२४. डॉ. भरत शास्त्री, इन्दौर—पंचकल्याणक प्रतिष्ठा की क्रियाविधि के कुछ सुझाव

विश्वविद्यालय के तत्कालीन कुलपति प्रो. डी.के. शर्मा कृति के आमुख में लिखते हैं।

'यह देखकर सुखद आश्चर्य हुआ कि संस्करों की पृष्ठभूमि में भारतीय समाज का चिन्तन लगभग एक समान है। क्षेत्र एवं काल की विभिन्नताओं से हुए परिवर्तनों के बावजूद उनकी चिन्तनधारा लगभग समान है। अहिंसा प्रधान जैन जीवनशैली आज की अनेक ज्वलंत समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करती है। इस जीवनशैली का सम्यक् विकास करने हेतु अनेक संस्कार संयोजित किये गये हैं जिनकी चर्चा विद्वान लेखकों ने अपने आलेखों में की है। पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव जैन संस्कृति के अभिन्न अंग है क्योंकि इस क्रिया से ही पाषाण से भगवान बनते हैं। कालक्रम से उत्पन्न हुए मत वैषम्य, विकृतियों की चर्चा करते हुए कुछ लेखकों ने समाधान भी प्रस्तुत किये है फलत: सांस्कृतिक क्षरण रोकने हेतु इस प्रकार का विचार विमर्श जरूरी है।'

डॉ. अनुपम जैन अपने सम्पादकीय में लिखते है कि 'यह संगोष्ठी समाज में मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठापना एवं सुसंस्कारों में वृद्धि के लक्ष्य को ध्यान में रखकर आयोजित की गई थी।' फलत: इनका समाज तक पहुँचना जरूरी है। इस कृति के माध्यम में संस्कारों के विषय में जागरुकता पैदा करने में मदद मिली है। कृति पठनीय एवं संकलनीय है।

महामहिम राज्यपाल म.प्र. द्वारा विमोचित यह कृति निम्न पते पर उपलब्ध है:—

श्रमण संस्कृति विद्यावर्द्धन ट्रस्ट
C/o गुप्तिसदन दि. जैन मंदिर,
कालानी नगर—इन्दौर (म.प्र.)
मोबा. : ९४२४० ६८४००

तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय (TMU) मुरादाबाद में भारतीय ज्ञान परम्परा केन्द्र (IKS Centre) का शुभारम्भ

श्रुत पंचमी पर्व पर गत 24 मई 2023 को श्री सुरेश जैन कुलाधिपति की प्रेरणा से देवी अहिल्या विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. जैन, इन्दौर एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रघुवीर सिंह जी की उपस्थिति में IKS Centre का शुभारम्भ किया गया। विश्वविद्यालय के विशाल परिसर "के एक भवन की पूरी मंजिल में पुस्तकालय, सभाकक्ष, निदेशक कक्ष, आदि की व्यवस्था करने के साथ ही शोधार्थियों हेतु सभी आवश्यक सुविधायें जुटाई गई हैं।

केन्द्र के निदेशक एवं चेयर प्रोफेसर डॉ. अनुपम जैन ने बताया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सफल क्रियान्वयन तथा TMU के विद्यार्थियों को भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत से अवगत कराने हेतु इस केन्द्र की स्थापना की गई है। इसके माध्यम से न केवल विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अपितु अन्य संवैधानिक संस्थाओं द्वारा अनुमोदित पाठ्यक्रमों का संचालन किया जायेगा, तथा जैन, बौद्ध एवं वैदिक परम्पराओं के साहित्य के शोध, अध्ययन एवं अनुसंधान की भी उत्कृष्ट व्यवस्था रहेगी।

इस अवसर पर भारतीय विद्याओं के अध्ययन एवं अनुसंधान को समर्पित अर्द्धवार्षिक शोध पत्रिका श्रुत के प्रकाशन की घोषणा की गई। प्रथम अंक का प्रकाशन इसी वर्ष किया जायेगा।

केन्द्र के पुस्तकालय में वेद, पुराण, संहिताओं, उपनिषद, गायत्री परिवार द्वारा प्रकाशित साहित्य के अतिरिक्त जैन धर्म की दिगम्बर एवं श्वेताम्बर परम्परा के आगम ग्रंथों एवं प्राचीन आचार्यों द्वारा प्रणीत साहित्य भी संकलित किया जा रहा है। अनेक शोध पत्रिकाओं को भी संकलित किया जायेगा।

केन्द्र का शुभारम्भ प्रो. रेणु जैन द्वारा दीप प्रज्जवलित किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति, कुलपति, Chair Professor डॉ. अनुपम जैन के अतिरिक्त कुल सचिव प्रो. आदित्य शर्मा, डीन एकेडेमिक्स प्रो. मंजुला जैन, टिमिट के निदेशक डॉ. विपिन जैन, Law collage के डीन प्रो. हरबंस, केनरा बैंक की डिवीजनल मैनेजर डॉ. ममता अग्रवाल, पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. विनीता जैन, डॉ. ज्योतिपुरी, डॉ.गितांशु डावर, श्री साहिल शर्मा आदि अनेक प्राध्यापक, छात्र एवं विद्यानुरागीजन उपस्थित थे। उद्घाटन अवसर पर प्रो. रेणु जैन का विशेष व्याख्यान भारतीय ज्ञान परम्परा एवं जैन साहित्य विषय पर आयोजित किया गया। जिसमें लगभग 300 शिक्षक तथा छात्र-छात्राएँ उपस्थित रहे।

चिकित्सा कैंप का आयोजन संपन्न

श्री चंद्रप्रभ दिगंबर जैन मंदिर, भूलेश्वर में दिनांक 11 जून 2023 को प्रातः 11 बजे से चिकत्सा कैंप का आयोजन हुआ। यह आयोजन नगर के जाने माने प्रतिष्ठत श्री डी.सी. जैन के सुपुत्र श्री प्रवीण जैन की पत्नि स्व. श्रीमति बरखा प्रवीण जैन की पुण्य स्मृति में रखा गया था।

आयोजन में मुंबई के नामी अस्पतालों के विशेषज्ञों जिसमें सर्वप्रथम एचएन (HN) रिलाइंस अस्पताल के डॉ. पूजां पारिख जिन्होंने लंग्स (फेफड़ों) के बारे में होने वाली बीमारी इसके लक्षण और टीबी जैसी भयंकर बीमारी के लक्षण और उनसे उपाय के बारे में सभी को अवगत कराते हुए विस्तृत

जानकारी दी। इसी क्रम में केईएम (KEM) अस्पताल की डॉ. दीपा और डॉ.

धनश्री ने हार्ट अटैक आने की स्थिति में पीड़ित को प्राथमिक उपचार कैसे दें जिससे उसकी जान संभाली जा सके इसके बारे में विस्तृत जानकारी दी साथ ही सीपीआर का व्यहारिक प्रदर्शन भी किया गया।

आयोजन में श्री प्रवीण जैन ने सभी डॉक्टरों का धन्यवाद ज्ञापित किया। मंदिर के ट्रस्टी श्री डीसी जैन, श्री मनोज जैन, श्री दिनेश पांडे, श्री वसंत दोशी, श्री संजय राजा, श्री संदीप दोशी, श्री सोमचंद जैन, श्री अजित गांधी आदि ने आयोजन के सफल होने पर सबको बधाई दी। कार्यक्रम में सभी जगह के लोगों ने उपस्थित होकर स्वास्थ्य संबंधी लाभ लिया और कार्यक्रम को उपचार जागरूकता बढ़ाने में मदगार बताते हुए आयोजक के प्रति हार्दिक धन्यवाद व शुभकामनाएं ज्ञापित की।

विख्यात कलाविद जैन का जैन समाज ने किया अभिनन्दन

प्रिंट मिडिया डिजाइनर, रिसर्चर, पेंटर, आर्टिस्ट, जैन कमल का जैन समाज के पदाधिकारियों ने सदस्यों की ओर से स्वागत अभिनन्दन किया गया। स्थानीय जैन बड़ा मंदिर में जैन कमल ने अपनी कला की प्रस्तुती दी। जैन समाज के सदस्य श्री राज पाटनी ने बताया कि जैन कमल वर्षों से देश के शीर्ष मिडिया संस्थानों से जुड़े हुए हैं वे केन्द्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड के सदस्य भी रहे हैं। णमोकार मंत्र तथा जैनिज्म के अन्य विषयों पर आधारित उनकी अनुपम पेंटिंग्स व कलाकृतियों का देश-विदेश के अनेक उच्च मंचो पर प्रदर्शन व सम्मान होता रहा है। कार्यक्रम के दौरान जैन कमल ने बताया कि णमोकार तथा जैनिज्म के अन्य विषयों पर आधारित उनकी पेंटिंग्स का अगर गहनता से साक्षात्कार किया जाए तो आप को कलाकृति में मंदिर या चैत्यालय के दर्शन होने लगते हैं। णमोकार महामंत्र की पेंटिंग अक्षर के माध्यम से बनी है और अक्षर से ब्रह्म को पाने की और णमोकार मंत्र के सौन्दर्य को प्रकट करने की कोशिश की गयी है। श्री राज पाटनी ने बताया कि जैन कमल किसी भी कलाकृति पर अगर आप ध्यान लगाये तो वह आप को सृष्टि से जोड़ देगी उसमें एक - एक बिंदु शब्द व रंग में आप को चेतनता नजर आएगी वह बिजली सा प्रभाव छोड़ने लगेगी तथा मंत्रबद्ध कर देगी।

RNI-MAHBIL/2010/33592
Published on 1st of every month
License to post without prepayment -
WPP No. MR/Tech/WPP-90/South/2022-24
Jain Tirth vandana, English-Hindi JUNE 2023
Posted at Mumbai Patrika Channel, Mumbai GPO Sorting Office
Mumbai-400001, Regd. No. MCS/160/2022-24
Posted on 16th and 17th of every month

With Compliments

From:

GFL

GUJARAT FLUOROCHEMICALS LTD.

(Company of Siddho Mal-Inox Group)

INOX

GROUP OF COMPANIES

Corporate office :
INOX Towers, 17, Sector 16-A,
NOIDA - 201 301 (U.P.)
Tel: 0120-614 9600
Email : contact@gfl.co.in

New Delhi Office :
612-618, Narain Manzil, 6th Floor,
Barakhamba Road,
New Delhi - 110 001
Tel: +91-11-23327860
Email : siddhomal@vsnl.net

Printed and Published by UMANATH RAMAJOR DUBEY on behalf of BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE, Printed at TRIMURTI PRINTERS, 5/7 DADARKAR BUILDING, V P ROAD, C P TANK, MUMBAI-400 004 and Published from BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE, HIRABAUG, 2ND FLOOR, C P TANK, MUMBAI-400 004. Editor : UMANATH RAMAJOR DUBEY